Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

قُلۡ اِنۡ تُخۡفُوۡا مَا فِیۡ صُدُوۡرِکُمۡ اَوۡ تُبۡدُوۡہُ یَعۡلَمۡہُ اللّٰہُ ؕ وَ یَعۡلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ وَ اللّٰہُ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ○

(सूरत आले-इम्रान आयत :30)

अनुवाद: तू कह दे चाहे तुम उसे छुपाओ जो तुम्हारे सीनों में है या उसे प्रकट करो अल्लाह उसे जान लेगा और वह जानता है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है और अल्लाह हर चीज़ पर जिसे वह चाहता है स्थायी कुदरत रखता है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 8

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

15 जमादी सानी 1440 हिजरी कमरी 21 तब्लीग़ 1397 हिजरी शमसी 21 फरवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

ख़ुदा तआला मुत्तकी का ख़ुद सुरक्षा करने वाला हो जाता है और उसे इस तरह के अवसरों से बचा लेता है जो सच्चाई के ख़िलाफ बोलने पर मजबूर करने वाले हों। याद रखो जब अल्लाह तआला को किसी न छोड़ा, तो खुदा ने उसे छोड़ दिया। जब रहमान ने छोड़ दिया, तो जरूर शैतान अपना रिश्ता जोड़ेगा।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

तक्वा की बरकतें

हमेशा देखना चाहिए कि हम ने तक्वा तथा पवित्रता में कहां तक उन्नति की। इस का माप दण्ड कुरआन है। अल्लाह तआला ने मुत्तकियों के निशानों में से एक यह भी रखा है कि अल्लाह मुत्तकी को दुनिया के कामों से आज़ाद कर के उस के कामों को ख़ुदा करने वाला हो जाता है।

وَمَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجۡعَلۡ لَّہٗ مَخۡرَجًا ۙ وَّ یَرۡزُقۡہُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَحۡتَسِبُ

(सूरह अत्तलाक 3.4)

जो आदमी अल्लाह तआला से भय रखता है अल्लाह तआला प्रत्येक मुसीबत में उस के लिए परेशानी से बचाव का रास्ता रख देता है और उस के लिए इस तरह को रोज़ी के सामान पैदा कर देता है कि उस के ज्ञान में भी नहीं होता। अर्थात यह भी एक निशानी मुत्तकी की है कि अल्लाह तआला मुत्तकी को न चाहने वाली ज़रूरतों का मुहताज नहीं करता। जैसे एक दुकानदार यह विचार करता है कि झूठ बोले बिना इस का काम नहीं चल सकता इस लिए वह झूठ बोलने के नहीं रुकता। और झूठ बोलने के लिए मजबूरी प्रकट करता है परन्तु यह बात हरगिज़ सच नहीं। ख़ुदा तआला मुत्तकी का ख़ुद सुरक्षा करने वाला हो जाता है और उसे इस तरह के अवसरों से बचा लेता है जो सच्चाई के ख़िलाफ बोलने पर मजबूर करने वाले हों। याद रखो जब अल्लाह तआला को किसी न छोड़ा, तो खुदा ने उसे छोड़ दिया। जब रहमान ने छोड़ दिया, तो जरूर शैतान अपना रिश्ता जोड़ेगा।

यह न समझो कि अल्लाह तआला कमज़ोर है। वह बड़ी ताकत वाला है। जब इस पर किसी बात पर भरोसा करोगे वह ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा। وَمَنۡ یَّتَوَکَّلۡ عَلَی اللّٰہِ فَہُوَ حَسۡبُہٗ (अत्तलाक 4) परन्तु जो लोग इन आयतों के पहले सम्बोधित थे वे धर्म को मानने वाले थे। उन की सारी चिन्ताएं केवल धर्म के मामलों के लिए थीं। और सांसारिक मामले अल्लाह तआला के हवाले थे। इसलिए अल्लाह तआला ने उन को तसल्ली दी कि मैं तुम्हारे साथ हूं। अत: तक्वा की बरकतों में से एक यह भी है कि अल्लाह तआला मुत्तकी को उन मुसीबतों से नजात प्रदान करता है जो धार्मिक मामलों में रोक हों।

मुत्तकी के लिए रूहानी तरक्की

इसी तरह अल्लाह तआला मुत्तकी को विशेष रूप से रिज़्क देता है। यहां मैं मआरिफ के रिज़्क का वर्णन करूंगा। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अनपढ़ होने के बावजूद सारी दुनिया का मुकाबला करना था जिस में ईसाई यहूदी, दार्शनिक, उच्च स्तर के ज्ञान रखने वाले शामिल थे। परन्तु आप को रूहानी रिज़्क इतना मिला कि आप सब पर विजयी हुए। और उन सब की ग़लतियां निकालीं।

ये रूहानी रिज़्क था जिस की तुलना नहीं। मुत्तकी की शान नें दूसरे स्थान पर फरमाता है اِنۡ اَوۡلِیَآؤُہٗۤ اِلَّا الۡمُتَّقُوۡنَ (अन्फाल35) अल्लाह तआला के वली वे हैं जो मुत्तकी हैं। अर्थात अल्लाह तआला के दोस्त। अत: यह किस तरह की नेअमत है कि थोड़ी सी चेष्टा से अल्लाह तआला के मुत्तकी कहलाए। आज कल ज़माना कितना कम हिम्मत वाला है। अगर कोई हाकिम या अफसर किसी को कह दे कि तू मेरा दोस्त है या उस को कुर्सी दे और उस कमा सम्मान करे तो वह शेख़ी करता है, गर्व करता फिरता है। परन्तु उस इन्सान का कितना अफज़ल सम्मान होगा जिस को अल्लाह तआला अपना वली या दोस्त कह दे। अल्लाह तआला ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़बान से यह मुबारक वादा फरमाया है जैसा कि एक हदीस बुख़ारी में आया है

لَا یَزَالُ یَتَقَرَّبُ عَبۡدِیۡ بِالنَّوَافِلِ حَتّٰی اُحِبَّہٗ فَاِذَا اَحۡبَبۡتُہٗ کُنۡتُ سَمۡعَہُ الَّذِیۡ یَسۡمَعُ بِہٖ وَبَصَرَہُ الَّذِیۡ یُبۡصِرُ بِہٖ وَیَدَہُ الَّتِیۡ یَبۡطِشُ بِہَا وَرِجۡلَہُ الَّتِیۡ یَمۡشِیۡ بِہَا وَلَئِنۡ سَاَلَنِیۡ لَاُعۡطِیَنَّہٗ وَلَئِنِ اسۡتَعَاذَنِیۡ لَاُعِیۡذَنَّہٗ (صحیح بخاری، جزرابع، باب التواضع)

अर्थात अल्लाह तआला फरमाता है कि मेरा वली मेरे साथ इस तरह का कुर्ब नफलों के माध्यम से पैदा कर लेता है।

फर्ज़ तथा नफल

इन्सान जितनी नेकियां करता है इस के दो भाग होते हैं एक फर्ज़ दूसरे नफल फर्ज़ अर्थात जो इन्साम पर फर्ज़ किया गयाहै जैसे कर्ज़ा का उतारना या नेकी के मुकाबला में नेकी करना, इन फर्ज़ों के सात हर एक नेकी के साथ नफल होते हैं जैसी इस तरह की नेकी जो उस के हक के साथ अधिक हो जैसे इहसान के मुकाबला में इहसाम के अतिरिक्त और इहसान करना। ये नफल हैं। यह फर्जों को पूर्ण तथा परिपूर्ण करने वाले हैं। इस हदीस में वर्णन है कि अल्लाह की वलियों के फर्ज़ की पूर्णता नफलों के माध्यम से होती रहती है जैसे ज़कात के इलावा और सदके देते हैं। अल्लाह तआला इस तरह के लोगों का वली होता है अल्लाह तआला फरमाता है कि उस की दोस्ती यहां तक होती है कि मैं उस के हाथ , पांव यहां तक कि उस की ज़बान बन जाता हूं जिस से वह बोलता है।

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

हे अंसार के गिरोह ! तुम में से कुछ इस तरह के नेक लोग हैं कि यदि वे ख़ुदा की कसम खाकर कोई बात करें तो ख़ुदा तआला उन की वह बात ज़रूर पूरी करता है।

इताअत तथा श्रद्धा की साक्षात मूर्ति बदरी सहाबी हज़रत ख़ल्लाद बिन अमरो जमूह और हज़रत उक्बा बिन आमिर रज़ि अल्लाह अन्हुम की मुबारक सीरत का वर्णन।

हे हिन्द अमरो बिन जमोह ख़ल्लाद और तेरा भाई अब्दुल्लाह जन्नत में आपस में दोस्त हैं।

अमरीका की एक बहुत पुरानी नेक, श्रद्धा वाली बुज़ुर्ग अहमदी औरत सिस्टर आलिया शहीद अहमद की वफात पर उन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

अल्लाह तआला उन के स्तर बुलन्द फरमाए और उन की नस्ल में भी वह रूह और सेवा की भावना पैदा फरमाए जो उन में थी।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 जनवरी 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत ख़ल्लाद बिन अम्रो इब्न जुमूह अंसारी एक सहाबी थे और बदरी सहाबी में से थे। आप अपने पिता हज़रत अम्रो जमूह और भाइयों हज़रत मुआज़, हज़रत अबू इयमन और हज़रत मुअव्वज़ के साथ जंग बदर में शामिल थे। अबू इयमन के बारे में यह भी कहा जाता है कि ये आपके भाई नहीं थे बल्कि आपके पिता हज़रत अमरो बिन जुमूह के ग़ुलाम थे।

(असदुल-ग़ाबाह, खंड 1 पृष्ठ 184, ख़ल्लाद बिन अमरो, प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 2003 ई)

जंग बदर के लिए रवाना होते ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने लश्कर के साथ मदीना से बाहर एक जगह सुकिया के पास ठहरे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन कत्तादाह अपने पिता से वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सुकिया, मदीना के बाहर एक जगह थी, जहाँ एक अच्छा कुआं भी था, उसके पास नमाज़ अदा की और मदीना के लोगों के लिए दुआ की। इस अवधि के दौरान, हज़रत अदी इब्न अबी अर्ग़बा और बसबस बिन अमरो वासी, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए, और कुछ रिवायतओं के अनुसार, अब्दुल्लाह बिन अमरो इब्न हराम भी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए। और निवेदन किया कि हे आं हज़रत आप का इस स्थान पर ठहरना और सहाबा की समीक्षा करना बहुत अच्छा है, और हम इसे एक नेक बात मानते हैं, क्योंकि जब हमारे अर्थात बनु सलमा और अहले हुसैक: के बीच में जंग हुई थी तो हम ने यहीं पर पढ़ाव किया था। इस्लाम से पहले की पुराने बात कर रहे हैं। मदीना के निकट जुबाब नामक एक पहाड़ है। हुसैक: इस पहाड़ के पास स्थित था जहाँ यह बड़ी संख्या में यहूदी थे। उसी स्थान पर कहते हैं कि हम ने भी अपने साथियों की उपस्थिति और समीक्षा भी की थी, और जो युद्ध की शक्ति रखते थी, उन्हें अनुमति दी गई थी, और जो हथियार उठाने के योग्य न थे उन्हें वापस भेज दिया गया था और फिर हमने हुसेक: के यहूद की तरफ कदम बढ़ाए । उस समय, हुसैक: के यहूदी सभी यहूदियों पर भारी थे, इसलिए हमने उन्हें जिस तरह चाहा कत्ल किया। उनकी आपस में लड़ाई हुई थी। इसलिए उन्होंने कहा, हे आं हज़रत! मुझे उम्मीद है कि जब हम क़ुरैश के सामने होंगे, तो अल्लाह तआला आपकी आँखों को उन से ठंडक प्रदान करेगा, अर्थात आप को जीत हासिल होगी जैसा कि अतीत में हो चुकी है।

हज़रत ख़ल्लाद बिन अमरो कहते हैं कि जब दिन चढ़ा तो मैं ख़ुर्बा में अपने परिवार के पास गया। ख़ुर्बा उसी मुहल्ले का नाम है जहां बानो सलमा के घर थे। कहते हैं मेरे पिता हज़रत अम्र बिन जमूह ने कहा कि मेरा विचार था कि तुम लोग जा चुके हो। पहली रिवायत जो वर्णन हुई थी उस में लिखा है पिता अमरो बिन जमूह के साथ जंग बदर में शामिल हुए लेकिन इस रिवायत और बाद की रिवायतो से ऐसा लगता है कि पिता शामिल नहीं हुए थे। मैंने उनसे कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सुकिया के मैदान में लोगों की समीक्षा और गिनती कर रहे हैं। तब हज़रत अमरो ने कहा कि क्या ही नेक बात है। अल्लाह की कसम! मुझे उम्मीद है कि तुम जंग के मैदान में विजय प्राप्त करोगे। और कुरैश के मुशरेकीन सफलता प्राप्त करोगे। जिस दिन हम हुसैक: के तरफ बढ़े हम ने भी यहीं पर पड़ाव डाला था। उस पुरानी बात को भी वर्णन कर रहे हैं जो पहले रिवायत में वर्णन की गई थी कि युहूदियों की आपस में लड़ाई हुई थी।

हज़रत ख़ल्लाद वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुज़ैक: का नाम बदल कर उस का नाम सुकिया रख दिया। मेरे दिल में इच्छा पैदा हुई कि मैं सुकिया को ख़रीद लूं। लेकिन मुझ से पहले ही हज़रत सअद बिन अबी वकास ने इसे दो ऊंटों के बदले में ख़रीद लिया था, और कुछ के अनुसार, उन्होंने सात औकिया अर्थात दो सौ अस्सी दिरहम के बदले में ख़रीदा था। जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास इस बात का उल्लेख हुआ, तो आपने फरमाया, रबेहुल बेओ अर्थात इसका सौदा बहुत लाभदायक है।

(किताबुल मुग़ाज़ी भाग 1 पृष्ठ 37-38 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 2013ई (मुअजमुल बुलदान भाग 3, पृष्ठ 258 सुकिया प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इमिया बैरुत (वफाउल वफा खंड 3 पृष्ठ 1200 ख़ुरबी प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 1984 ई) (लुग़ातुल हदीस जिल्द 1 पृष्ठ 82 औकिया प्रकाशक अली आसिफ प्रिंटर 2005 ई)

हज़रत ख़ल्लाद के पिता हज़रत अम्रो बिन जमूह बदर में शामिल नहीं हुए थे। ख़ल्लाद और आपके पिता हज़रत अम्ररो बिन जमूह और हज़रत अबू इयमन तीनों जंग उहद में भी शामिल हुए थे और तीनों शहीद हुए थे।

(मुस्तदरिक अलस्सहीहैन जिल्द 3 पृष्ठ 226 किताब मअरफतुल सहाबा ज़िक्र मनाकिब अमरो बिन जुमूह प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इमिया बैरूत 2002 ई) अर्थात ख़ुद भी और भाई भी और पिता भी जंग बद्र में शामिल हुए थे । इन के पिता जंग बदर में शामिल नहीं हुए थे। उन की शामिल होने की इच्छा थी परन्तु उन की टांग की मजबूरी के कारण, उन की एक टांग में लंगड़ाहट थी, विकलांग थे। इसलिए उन्हें उन के बेटों ने जंग बद्र में शामिल होने से रोक दिया था।

हज़रत ख़ल्लाद के पिता हज़रत अमरो बिन जुमूह के बारे में आता है कि जंग बदर के अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जेहाद की तहरीक फरमाई तो अमरो के पैरों में दर्द होने के कारण उनके बेटों ने उन्हें युद्ध में शामिल होने से रोक दिया था। अल्लाह तआला ने भी युद्ध में शामिल होने से विकलांगों को छूट दी हुई है। इसलिए अपने बेटों के रोकने के कारण वह जंग में शामिल नहीं हुए थे लेकिन जब उहद का अवसर आया तो अमरो ने अपने बेटों से कहा, तुमने मुझे बदर में शामिल होने की अनुमति नहीं दी। मैं अवश्य उहद में जाऊंगा और शामिल होऊंगा। बहरहाल उन्होंने कहा, अब तुम मुझे रोक नहीं सकते और मैं निश्चित रूप से इसमें शामिल हो जाऊंगा। फिर औलाद ने उन्हें उन की विकलांगता के कारण से रोकना चाहा तो व ख़ुद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा मैं हाज़िर हुए कि मैं ख़ुद ही हुज़ूर से अनुमति ले लूंगा। इसलिए वह हुज़ूर की सेवा में उपस्थित हुए और कहा, मेरे बेटे, इस बार फिर मुझे जिहाद से रोकना चाहते हैं।

पहले बद्र में रोका था। अब उहद में भी नहीं जाने देते। मैं आपके साथ इस जिहाद में शामिल होना चाहता हूं। फिर उन्होंने कहा, ख़ुदा की कसम ! मुझे उम्मीद है कि अल्लाह तआला मेरी मुराद को स्वीकार करेगा और मुझे शहादत प्रदान करेगा, और मैं अपने इसी लंगड़े पैर के साथ जन्नत में प्रवेश करूंगा।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "हे अमरो! बेशक अल्लाह तआला को आपकी विकलांगता स्वीकार है और जिहाद आप पर फर्ज़ नहीं लेकिन उन के बेटों को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम लोग उन्हें अच्छे कामों से मना मत करो। यदि उनकी दिल की इच्छाएँ इस तरह से है तो उसे अल्लाह तआला उसे पूरे फरमा दे और शहादत प्रदान करे। इसलिए हज़रत अम्रो ने अपने हथियार लिए और यह दुआ करते हुए उहद के मैंदान की तरफ रवाना हुए

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنِی شَھَادَۃً وَلَا تَرُدَّنِیْ اِلٰی اَھْلِیْ خَائِبًا۔

ऐ अल्लाह! मुझे शहादत प्रदान करना और मुझे अपने घर की तरफ असफल तथा ना मुराद न लाना। अल्लाह तआला ने उन की दुआ को स्वीकार किया और वह वहां शहीद हुए।

(असदुल-ग़ाबा भाग 4 पृष्ठ 195-196 ख़ल्लाद बिन अमरो, प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2003)

हज़रत ख़ल्लाद की माँ हज़रत हिंद-ए-अमरो (उनके पिता का नाम भी अमरो था और उनके पति का नाम भी) जाबिर इब्न अब्दुल्लाह की फूफी भी थीं। जंग उहद में हज़रत हिन्द ने अपने पिता अपने बेटे और अपने भाई को शहादत के बाद ऊंट पर लादा। फिर जब उन के बारे में आदेश हुआ तो उन्हें वापस उहद वापस लाया गया और उन्हें अहद में दफनाया गया।

(असदुल 2, भाग पृष्ठ 287, प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इमिया बैरुत 1995 ई)

जब यह पता चला कि शहीद हो गए हैं, तो यह तीनों को पहले मदीना लेनेके लिए आई थीं लेकिन उन्हें वापस ले गईं और उसका वर्णन भी आगे आया है। यह ख़ुदा तआला की इच्छा थी कि उहद के शहीद उहद में ही दफन हों। इस घटना का विस्तार इस तरह मिलती है कि हज़रत आयशा जंग उहद के बारे में ख़बर लेने के लिए मदीना की महिलाओं के साथ घर से बाहर निकलीं। तब तक पर्दे का आदेश नहीं नाज़िल नहीं हुआ था। जब आप (हज़रत आयशा) हुर्रह के स्थान पर पहुंचे, तो आप की मुलाकात हिन्द बिन अम्रो से हुई जो अब्दुल्लाह बिन अम्रो की बहन थीं। हज़रत हिंद अपनी ऊँटनी को हांक रही थीं। इस ऊँटनी पर आपके पति हज़रत अम्रो बिन जमूह, हज़रत ख़ल्लाद बिन अमरो और भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरो की लाशें थीं। जब हज़रत आइशा ने युद्ध के मैदान की ख़बर लेने की कोशिश की, तो हज़रत आयशा ने उनसे पूछा, क्या आपके पास कोई खबर है कि तुम पीछे लोगों को किस अवस्था में छोड़ आई हो? इस पर हज़रत हिंद ने कहा कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सकुशल हैं, और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद प्रत्येक मुसीबत आसान है, जब आप सकुशल हैं, तो फिर कोई इस तरह की बात नहीं है। इसके बाद, हज़रत हिन्द ने यह आयत पढ़ी

وَرَدَّ اللّٰہُ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا بِغَیْظِھِمْ لَمْ یَنَالُوْا خَیْرًا۔ وَ کَفَی اللّٰہُ الْمُؤْمِنِیْنَ الْقِتَالَ۔ وَ کَانَ اللّٰہُ قَوِیًّا عَزِیْزًا

(सूरत अल्अहज़ाब 26) अर्थात और अल्लाह ने उन लोंगों को जिन्होंने कुफ्र किया उन के क्रोध सहित इस तरह लौटा दिया कि कोई भलाई प्राप्त न कर सके और अल्लाह मोमिनों के हक में लड़ाई के लिए काफी होगा और अल्लाह बहुत ही ताकत वाला और प्रभुत्व वाला है।

हज़रत आयशा ने पूछा कि ऊँटनी पर कौन कौन हैं? तब हिंद ने कहा कि मेरा भाई है, मेरा बेटा ख़ल्लाद है और मेरे पति अमरो बिन जुमूह हैं। हज़रत आयशा ने पूछा कि तुम इन्हें कहां ले जाती हो? उसने कहा कि इन्हें मदीना में दफन करने के लिए ले जा रही हूं। फिर वह अपने ऊंटनी को हांकने लगी तो ऊंट ज़मीन पर बैठ गया। हज़रत आयशा ने फरमाया इस पर भार अधिक है। जिस पर हिंद ने कहा कि यह तो दो ऊंटों जितना भार उठा लेता है, लेकिन इस समय यह इस के बहुत उलट कर रहा है। फिर उसने ऊंट को डांटा तो वह खड़ा हो गया। जब वह मदीना की ओर मुड़ा तो वह फिर बैठ गया। फिर जब वह उहद की ओर मोड़ा तो ऊंट जल्दी जल्दी चलने लगा। फिर हिन्द रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आईं और इस घटना के बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सूचना दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यह ऊंट मामूर किया गया है अर्थात इसे अल्लाह तआला ने मदीना की तरफ न जाए बल्कि उहद की तरफ ही रहे। फरमाया कि क्या तुम्हारे पति ने युद्ध में जाने से पहले कुछ कहा था? कहने लगीं कि जब अमरो उहद की तरफ रवाना होने लगे, तो उन्होंने किब्ला की तरफ मुंह कर के यह कहा था "ऐ अल्लाह! मुझे अपने लोगों की तरफ शर्मिंदा कर के न लौटाना और मेरे मुझे शहादत प्रदान करना। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यही वजह है कि ऊंट नहीं चल रहा था। फरमाया कि "हे अंसार के गिरोह! आप में से तुम में से कुछ इस तरह के नेक लोग हैं कि अगर वह ख़ुदा की कसम खाकर कोई हात कहें तो ख़ुदा तआला उन की बात ज़रूर पूरी करता है और अमरो बिन जुमूह भी उन में से एक हैं। तब आपने अम्रो बिन जुमूह की पत्नी से फरमाया, "हे हिन्द! जिस समय से तुम्हारा भाई शहीद हुआ है, फ़रिश्ते उस पर समय से उस पर साया किए हुए हैं और इंतज़ार में हैं कि उसे कहाँ दफनाया जाता है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन शहीदों के दफन होने तक वहीं रुके रहे। फिर फरमाया हे हिन्द अमरो बिन जुमूह तेरा बेटा ख़ल्लाद और तेरा भाई अब्दुल्लाह जन्नत में आपस में दोस्त हैं। इस पर हिन्द ने निवेदन कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे लिए भी दुआ करें कि अल्लाह मुझे भी जन्नत में उन लोगों की संगत प्रदान करे।

(किताबुल मुग़ाज़ी जिल्द 1 पृष्ठ 232-233 जंग उहद प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2013 ई)

दूसरे सहाबी जिन का वर्णन है वह उक्बा बिन आमिर हैं। उन की माता का नाम फुकैह बिन सकन था और पिता आमिर बिन नाबी थे। उन की माता भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ईमान लाई और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत की । हज़रत उक्बा बिन आमिर उन छः अन्सारी सहाबा में से थे जो सब से पहले मक्का में ईमान लाए। और बाद में बैअत उक्बा ऊला में शामिल हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 428 उक्बा बिन आमिर प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 8 पृष्ठ 301 फकीह बिन्त सकन प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 1990 ई)

इस का कुछ विस्तार हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए ने सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में लिखी है कि किस तरह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोशिशों से मदीना में इस्लाम पहुंचा। फरमाते हैं इस के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नियम के अनुसार मक्का में हुरमत वाले महीनों के अन्दर कबीलों का दौरा कर रहे थे आप को पता चला की यसरब का एक प्रसिद्ध व्यक्ति सुवैत बिन सामित मक्का में आया हुआ है। सुवैद मदीना का एक मशहूर आदमी था। और अपनी बहादुरी तथा वंश और दूसरे गुणों के कारण कामिल कहलाता था और शायर भी था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस का पता लेते हुए इस के डेरे में पहुंचे और इस्लाम की दावत दी। उस ने कहा कि मेरे पास भी एक विशेष कलाम है जिस का नाम मुजल्ला लुक्मान है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो कलाम आप के पास है मुझे भी उस का कोई हिस्सा सुनाओ। जिस पर सुवैद ने इस सहीफा का एक पृष्ठ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाया आप ने उस की प्रशंसा फरमाई अर्थात जो कुछ सुनाया गया था उस में अच्छी बातें थीं मगर फरमाया कि मेरे पास जो कलाम है वह बहुत उच्च तथा बुलन्द है अत: आप ने उसे कुरआन करीम का एक हिस्सा सुनाया। जब आप समाप्त कर चुके तो उस ने कहा कि वास्तव में यह बहुत अच्छा है। और यद्यपि वह मुसलमान नहीं हुआ परन्तु उस ने आप की सच्चाई को स्वीकार किया और आप को झुठलाया नहीं। परन्तु अफसोस के मदीना में जाकर उसे अधिक समय नहीं मिला वह शीघ्र ही किसी हंगामा में कत्ल हुआ। यह जंग बुआस से पहले की बात है।

इसके बाद इसी ज़माना के लगभग जंग बुआस से पहले आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फिर एक बार हज के अवसर पर कबीलों का दौरा कर रहे थे, अचानक आपकी नज़र कुछ अजनबी पुरुषों पर पड़ी। ये कबीला औस के थे और अपने मूर्ति पूजा करने वाले रक़ीबों ख़ज़रज के ख़िलाफ कुरैश से मदद लेने आए थे। यह भी जंग बुआस से पहले की घटना है। मानो यह मदद मांगना इसी जंग की तैय्यारी थी। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पास आए और इस्लाम की दावत दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तकरीर को सुन कर

एक नौजवान आदमी जिसका नाम इयास था, उसने कहा, "ख़ुदा की कसम! जिस तरफ यह व्यक्ति अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमें बुलाते हैं, वह उस से बेहतर है जिसके लिए हम यहां आए हैं। अर्थात जंग के लिए मदद मांगने के स्थान पर बेहतर है कि अल्लाह तआला की तरफ हम लौटें। लेकिन इस गिरोह के सरदार ने एक मुट्ठी कंकरी उठा कर उसके चेहरे पर मारी और कहा चुप रहो। हम इस काम के लिए यहां नहीं आए और इस बार भी यह मामला अटका रहा। लेकिन यह लिखा है कि जब इयास देश में लौटा, तो मरते समय उसकी ज़ुबान पर तौहीद का कलिमा था।

इस के कुछ समय बाद जब कि जंग बुआस हो चुकी तो11 नबवी को रजब के महीने में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक्का में यसरब वालों के साथ दोबारा मुलाकात हुई। यह नबुव्वत के ग्याहरवें साल की बात है। आप ने वंश का परिचय पूछा तो कबीला ख़ज़रज के लोग है और यसरब से आए हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बहुत ही मुहब्बत के अन्दाज़ में कहा" आप लोग मेरी कुछ बातें सुन सकते हो?" उन्होंने कहा, "हाँ! आप क्या कहते हैं? "आपने बैठकर उन्हें इस्लाम की दावत दी और कुरआन की कुछ आयतें सुनाकर अपने मिशन से परिचित किया। उन्होंने एक दूसरे को देखा और कहा कि यह एक मौका है। इस तरह न हो कि यहूदी हम से आगे बढ़ जाएं। यह कहकर सभी मुस्लिम हो गए। यह छह लोग थे जिनके नाम ये हैं:

1.अबू उमामा असअद बिन ज़रारह जो बनू नज्जार से थे और सब से पहले पुष्टि करने वाले थे। 2. औफ बिन हारिस यह भी बनू नज्जार से थे जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दादा अब्दुल लतीफ़ के ननिहाल का कबीले से थे। 3. राफेअ बिन मालिक जो बनू ज़रीक से थे। अब तक जो कुरआन शरीफ नाज़िल हो चुका था इस अवसर पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को प्रदान किया। 4. कुत्बा बिन अमिर जो बनी सलमा से थे। 5 उक्बा बिन आमिर जो बनी हराम से थे। (यह इन्ही का वर्णन हो रहा है सारी घटना में) यह उक्बा बिन आमिर बदरी सहाबी थे। और 6 जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन रिआब जो बनी उबैद से थे।

इस के बाद यह लोग आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विदा हुए और जाते हुए निवेदन किया कि हमें आपस की लड़ाईयों ने बहुत कमज़ोर कर दिया है हम में आपस में बहुत मतभेद हैं। हम यसरब में जाकर अपने भाइयों को इस्लाम की दावत देंगे। क्या आश्चर्य है कि अल्लाह तआला आप के माध्यम से हमें फिर एक हाथ में जमा कर दे। फिर हम हर तरह से आप की सहायता के लिए तैय्यार हैं। अत: ये लोग गए और इन के कारण से यसरब में इस्लाम का चर्चा होने लगा।

यह साल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का वालों की तरफ से ज़ाहरी अवस्था को देखते हुए आशा निराशा के मध्य में व्यतीत किया। आप प्राय: यह विचार करते थे कि देखें इन का अन्जाम क्या होता है और आया यसरब में सफलता की कोई आशा बंधती है या नहीं। मुसलमानों के लिए भी यह ज़माना ज़ाहरी हालात की दृष्टि से एक आशा निराशा का ज़माना था। कभी उम्मीद की किरण होती थी कभी निराशा होती थी। वे देखते थे कि मक्का के सरदार और तायफ के आमीरों ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मिश्न को कठोरता से रद्द कर दिया था। अन्य कबीले भी एक एक कर के इन्कार पर मुहर लगा चुके थे। मदीना में आशा कि एक किरण पैदा हुई थी मगर कौन कह सकता था कि मुसीबतों तथा कष्टों के मध्य में आंधियों में स्थापित रह सकेगी।

दूसरी ओर मक्का वालों के अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे थे। उन्होंने इस बात को अच्छी तरह समझ लिया था कि इस्लाम को मिटाने का यही उचित अवसर है, लेकिन इस नाज़ुक समय में भी जिस से अधिक नाज़ुक समय, कभी भी इस्लाम पर नहीं आया। पैगंबर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के ईमानदार सहाबी एक मजबूत चट्टान की तरह अपने स्थान पर स्थापित थे और आपका यह दृढ़ निश्चय कभी कभी आप के विरोधियों को भी आशचर्य में डाल देता था कि यह आदमी किस शक्ति का मालिक है कोई चीज़ इसे अपने स्थान से हिला नहीं सकती। उस समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप के शब्दों में एक विशेष रौब तथा प्रताप था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब भी बात करते थे तो आप की बातों में बड़ा रौब तथा प्रताप होता था और दु:खों के इस तूफान में आप का सिर और भी ऊंचा हो जाता था। यह नज़ारा एक तरफ अगर मक्का के कुरैश को हैरान करता था तो दूसरी तरफ उन के दिलों पर भी कभी कभी प्रभाव डाल देता। इन दिनों के बारे में सर विलियम म्यूर ने भी लिखा है कि

इन दिनों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी क़ौम के सामने इस तरह मुकाबला कर रहे थे कि कई बार उन्हें हरकत के मुकाबला करने की ताकत न होती थी। अपनी विजय के विश्वास भरे हुए परन्तु ज़ाहिर में असमर्थ यह छोटा सा गिरोह अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के साथ छोटा सा गिरोह कुछ मुसलमान इस ज़माना में मानो एक शेर के मुंह में थे। परन्तु उस ख़ुदा की सहायता पर पूर्ण विश्वास करते हुए जिस ने उसे रसूल बना कर भेजा था मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक इस तरह के दृढ़ विश्वास के साथ अपने स्थान पर खड़ा था विल्यम म्यूर लिखता है कि जिसे कोई चीज़े अपने स्थान से हिला नहीं सकती थी। यह नज़ारा एक इस तरह का शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है जिस का उदाहरण सिवाए इस्राईल की इस अवस्था के और कहीं नज़र नहीं आती कि जब उस ने मुसीबतों तथा कष्टों में घिर कर ख़ुदा के समाने यह शब्द कहे थे हे मेरे आक़ा! अब तो मैं हां केवल मैं अकेला रह गया हूं। फिर लिखते हैं कि नहीं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह दृश्य इस्राइली नबियों से भी एक अर्थ में बढ़ कर था..... मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के यह शब्द इसी अवसर पर कहे गए थे हे मेरी क़ौम का सरदारो! तुम ने जो कुछ करना है कर लो मैं भी किसी आशा पर खड़ा हूं।

हालाँकि यह इस्लाम के लिए एक बहुत ही नाज़ुक अवसर था। मक्का वालों की तरफ से तो सम्पूर्ण रूप से निराश हो चुकी थी लेकिन मदीना में ये जो बैअत कर के गए थे उन के कारण से आशा की किरण पैदा हो गई थी। और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत ध्यान के साथ इस तरफ नज़रें लगाई हुए ते कि आया मदीना भी आप का मक्का तथा तायफ की तरह रद्द करता है या इस की किस्मत दूसरे रंग में है। इसलिए जब हज का अवसर आया, तो आप बड़े शौक से अपने घर से निकले और मिना की तरफ उक्बा के पास पहुंच कर इधर उधर देखा तो आप की नज़र अचानक यसरब के एक छोटे से समूह पर पड़ी, जिसने आपको तुरंत देखा आपको हार्दिक प्यार और ईमानदारी से मिले। इस बार ये बारह लोग थे, जिनमें से पांच पिछले साल के तस्दीक करने वाले थे और सात नए थे और औस तथा खज़रज दोनों कबीलों में से थे। उनके नाम ये हैं।

1 अबू इमाम: असद बिन ज़ुरैरह 2. औफ बिन हारिस 3. राफेअ बिन मालिक 4. कुतुब: बिन अमिर 5. उक्बा बिन अमि उक्बा बिन आमिर जिन की जावनी वर्णन हो रही है. यह इस बार भी दोबार हज के लिए आए। 6. मुआज़य इब्न हरिस। यह कबीला बनी नजार से थे और 7 ज़क़वान बिन अब्दुलकैस यह कबीला बनू ज़ुरीक से थे। 8. अब्दुर्रहमान यज़ीद बिन सअलबी अज़ बनी बिली और 9 उबादह बिन सामित अज़ बनी औफ वग खज़रज कबीला के बनी बिल्ली से थे और यह बनी औफ से थे। 10.अब्बास बिन उबुादा बिन नेज़ला। यह बनी सलाम में से थे। 11. अबुल हसीम बिन तेहानन, यह बनी अब्द अल्अशहल के थे और 12 उवैम बनि साइद यह औस के कबीला बनी अमरो बिन औफ से थे

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों से अलग हो कर इन बारह लोगों से मिले। उन्होंने यसरब के हालात से परिचित किया और अब की बार सब ने आप के हाथ पर बैअत की। यह बैअत मदीना में इस्लाम की स्थापना की नींव है। चूंकि अब तक तलवार का जिहाद फर्ज़ नहीं हुआ था, इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन से केवल इन शब्दों में बैअत ली थी, जिसमें आप जिहाद फर्ज़ होने के बाद आप महिलाओं से बैअत लिया करते थे, अर्थात यह कि हम अल्लाह तआला को एक जानेंगे। शिर्क नहीं करेंगे। चोरी नहीं करेंगे। व्यभिचार नहीं करेंगे। कत्ल से रुकेंगे। किसी पर आरोप नहीं लगाएंगे और हर अच्छे काम में आपका पालन करेंगे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, "अगर तुम सच्चाई के साथ इस वादा पर स्थिरता दिखाओ तो तुम्हें जन्नत नसीब होगी और अगर कमज़ोरी दिखाए तो फिर तुम्हारा मामला अल्लाह तआला के साथ है, वह जिस तरह चाहेगा करेगा।" यह बैअत तैरीख़ में बैअत ऊला के नाम से जाना जाता है, क्योंकि जिस स्थान पर बैअत ली गई थी, उक्बा कहलाती है जो मक्का और मीना के बीच स्थित है। उक्बा का शाब्दिक अर्थ एक उच्च पहाड़ी रास्ता है।

मक्का छोड़ते समय, इन बारह नौ मुसलमानों ने अनुरोध किया कि कोई इस्लामी मुबल्लिग़ हमारे साथ भेजा जाए जो हमें इस्लाम सिखाए और हमारे बहुदेववादी भाइयों को इस्लाम का प्रचार करे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

मुसअब बिन उमैर को जो कबीला अब्दुद्दार के एक बहुत ही ईमानदार नौजवान थे भेजा। इस्लामिक मुबल्लिग़ उन दिनों क़ारी या मुकरी कहलाते थे क्योंकि उनका काम अधिकतर कुरआन शरीफ सुनाना था क्योंकि यही तब्लीग़ का एक बहुत बड़ा माध्यम था। अत: मुस्अब भी यसरब गए तो मदीना में मुकरी के नाम से प्रसिद्ध हो गए। बैअत उक्बा सानिया जो थी यह13 नबवी में हुई थी। और इस में 70 अन्सार थे।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 221,225,227)

हज़रत उक्बा बिन आमिर जंग बदर उहद और खंदक समेत सारी जंगों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शरीक हुए। आप जंग उहद में कवच में हरे रंग के कपड़ा को पहनने के कारण से पहचाने जा रहे थे। आप हज़रत अबू बकर की ख़िलाफत के ज़माना में 12 हिदरी को यमामा की जंग में शहीद हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 428 उक्बा बिन आमिर प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इिलमया बैरूत 1995 ई)

हज़रत उक्बा बिन आमिर वर्णन करते हैं कि मैं अपने बेटे को लेकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुआ जब कि अभी वह नई आयु के थे। मैंने निवेदन किया के मेरे माता पिता आप पर कुरबान हूं मेरे बेटे को दुआएं सिखाएं जिन के माध्यम से वह अल्लाह तआला से दुआ किया करे और इस पर रहम करें। आप ने फरमाया हे लड़के! कहो

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ صِحَّۃً فِیۡ اِیۡمَانٍ وَاِیۡمَانًا فِیۡ حُسۡنِ خُلُقٍ وَصَلَاحًا یَتۡبَعُہٗ نَجَاح

(असदुल ग़ाबा, खंड 4 पृष्ठ 52, उक्बा इब्न अमिर प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इिलमया बैरूत 2003 ई)

कि हे अल्लाह! मैं तुझ से ईमान की हालत में सेहत मांगता हूं और ईमान के साथ अच्छे आचरण की दुआ करता हूं और सुधार के बाद सफलता चाहता हूं। अल्लाह तआला इन सहाबा के स्तर उच्च करे।

अब जब मैं एक अमेरिका के बहुत पुराने बुज़ुर्ग अहमदी का उल्लेख करूंगा, और फिर उन का नमाज जनाज़ा भी जुम्अ: के बाद भी पढ़ाऊंगा। उनका नाम सिस्टर आलिया शहीद था और यह अहमद शहीद साहिब दिवंगत पत्नी थी। 26 दिसंबर को उन की वफात हुई। अल्लाह तआला ने उन्हें एक लंबा जीवनकाल दिया और उन्हें काम करने का अवसर दिया। साथ ही विकलांगता से भी बचाया। 105 साल की उन की आयु थी। अल्लाह तआला उन के स्तर ऊंचे करे।

अमीर साहिब अमरीका ने उनके बारे में लिखा है कि उन्होंने 1936 ई में बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त किया था, और आप ने 1963 ई से 1966 ई तक सदर लज्ना इमाउल्लाह अमेरिका के रूप में सेवा की तौफीक़ पाई थी। इसी तरह, स्वर्गीया को, लज्ना इमाउल्लाह अमरीका में पचास साल पर आधारित एक लम्बा समय जनरल सैक्रेटरी, सैक्रेटरी मॉल, सैक्रेटरी शिक्षा, सैक्रेटरी ख़िदमते ख़लक और स्थानीय सदर लज्ना के रूप में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। हमेशा जमाअत और ख़िलाफत से गहरा सम्बन्ध रहा और हर तरह की कुर्बानी के लिए तैय्यार रहती थीं। यह बहुत ही दयालु और प्यार करने वाली महिला थीं। आप को जमाअत अहमदिया अमरीका के आरम्भ की घटनाएं ज़बानी याद थीं, जिसका आप अक्सर उल्लेख करती थीं। उन्हें हज़रत चौधरी ज़फ़रुल्लाह खान साहिब को घर पर खाने के पर आमंत्रित करने का भी अवसर मिला। पति अहमद शहीद साहिब को अमरीका की मज्लिस आमला में सदरजमाअत पीटसबर्ग के रूप में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। स्वर्गीया के पीछे रहने वालों में उन के इकलौते बेटे उमर शहीद साहिब शामिल है जिन्हें पिछले अठारह वर्षों से सदर जमाअत पीटसबर्ग के रूप में सेवा तौफीक़ मिल रही है। यह अफ्रीकन अमेरिकन अहमदी थीं।

सदर जमाअत लज्ना इमाउल्लाह अमेरिका उन के बारे में लिखती हैं कि उनकी जीवन शैली, उनकी बातें और उनकी हर हरकत से यह साबित होता था कि वह अपने बैअत के वादा पर दृढ़ता से अनुकरण करती थीं, जो उन्होंने 76 साल पहले किया था। उनकी सेवाएं केवल अमेरिका तक सीमित नहीं थीं, बल्कि उन को जानने वाले शायद दुनिया भर में थे, और जब यह सारी लज्ना पाकिस्तानी की सदर लज्ना के अधीन थी तो उस समय मर्यम सिद्दीका साहिबा जो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी की पत्नी थीं वह सारी दुनिया की सदर लज्ना थीं। उनकी तरफ से भी उन की सेवाओं को बहुत सराहा गया। यह लिखती हैं कि सिस्टर आलिया का नाम एला लुईस (Ella Louise) था इन के मंगेतर विलियम फ्रैंक ब्राउनिंग (William Frank Browning) अफ्रीकन मेथोडिस्ट चर्च (Methodist Church) के बहुत सक्रिय सदस्य थे। उन की शादी होने वाली थी और वह अपनी शादी की तैयारी में व्यस्त थीं, जब उनके मिया तक अहमदियत का सन्देश पहुंचा, तो विलियम साहिब अपने माता-पिता के साथ अहमदी हो गए और उन्होंने अपना नाम अहमद शहीद रखा। आलिया ने शादी तो कर ली लेकिन बैअथ नहीं की। अहमद शहीद साहिब कुछ समय बाद पीटसबर्ग के सदर जमाअत चुने गए और न केवल जमाअत में पसन्द किए गए बल्कि सारी दुनिया में अपने कामों के कारण प्रसिद्ध थे। उसी समय उनके यहां एक बेटा हुआ, जिसका नाम उन्होंने उम्र रखा।

आलिया साहिबा अपने अहमदी सुसराल में रहती थीं, जहाँ उन्होंने अपने ससुर और पति से छुपकर जमाअत की पुस्तकों का अध्ययन किया। उसी समय हज़रत मुस्लेह मौऊद की एक पुस्तक अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम पहुंची जिसे पढ़ कर वह बहुत प्रभावित हुईं। बाद में अपने घर पर आयोजित प्रशिक्षण कक्षाओं में भाग लेने लगीं। फिर एक दिन बंगाली साहिब, मुकर्रम अब्दुर्रहमान बंगाली साहिब जो वहां मुबल्लिग़ थे जिस में उन्होंने मसीह के सलीब से निजात और कश्मीर में हिजरत के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आस्था को वर्णन किया। यह सदर लज्ना लिखती हैं कि आप कहती थं कि उसके बाद मैंने चर्च जाना छोड़ दिया और मस्जिद में जाने लगी और आख़िरकार 1936 ई में अहमदियत स्वीकार कर ली। अपना नाम आलिया कैसे रखा? कहती हैं कि एक किताब में मैंने आलिया नाम पढ़ा जो मुझे बहुत अच्छा लगा। अहमदी होने के बाद मैंने इसी नाम को अपना लिया।

सिस्टर आलिया हमेशा ज्ञान की तलाश में रहने वाली थीं। मस्जिद की सफाई करते समय, खाना बनाते, नमाज़ पढ़ते, केवल यह नहीं कि वह ज्ञान प्राप्त कर रही हैं, बल्कि हमेशा विनम्रता से वकारे अमल भी किया करती थीं। जमाअत के काम भी किया करती थीं। अपने हाथ से मस्जिद की सफाई करना, खाना बनाना उनका काम था। फिर कहती हैं हमने हमेशा उन्हें नमाज़ें पढ़ते देखा है। ये उच्च नैतिकता की बातें हैं। बीमारों का हाल पूछते देखा। चंदों को अदा करते देखा है। हर समय नेकी की कोई न कोई तहरीक यह लज्ना में करती थीं। लिखती हैं कि स्वर्गीया का सारा ध्यान लज्ना के बीच एकता और भाईचारा बनाने पर केंद्रित था और जिसके लिए उन्होंने अपने अंतिम ज़माना में लज्ना को संबोधित करके कई पत्र लिखे थे। सदर लज्ना लिखती हैं कि एक आयत वह बहुत दोहराया करती थीं जो मैंने उनसे सुनी थी कि اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الَّذِیۡنَ یُقَاتِلُوۡنَ فِیۡ سَبِیۡلِہٖ صَفًّا کَاَنَّہُمۡ بُنۡیَانٌ مَّرۡصُوۡص (अस्सफ 5) कहती हैं यह हमेशा दोहराती रहती थीं। अर्थात अल्लाह तआला अवश्य उन लोगों से मुहब्बत करता है जो उस की राह में सफ बांध कर लड़ते हैं मानो वह एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।

सदर लज्ना ने लिखा है कि उन्होंने सब से पहले अमरीका में मस्जिद फंड की बुनियाद रखी। इसी तरही मुस्लिम स्टूडेंट फण्ड की स्थापना की। इन की सदारत में सब से पहला इज्तिमा आयोजित हुआ। इसी तरह नेशनल तब्लीग़ डे का आरम्भ की उन्होंने किया जिस में लज्ना कुरआन करीम का हज़ारों नुस्ख़े, तब्लीग़ी लाफ लेटस परिचयात्मक पम्फेलटस देश के पुस्तकालयों में भिजवाया करती थीं। उन्होंने लज्ना की एक पत्रिका भी शुरू की, जिसका नाम उस समय जो सारी दुनिया की सदर लज्ना थीं, हज़रत छोटी आपा मर्यम सिद्दीका साहिबा , उन्होंने 'आयशा' रखा। उन्होंने इस का नाम रखावाया। उन्होंने The path of faith और Our Duties के नाम पर भाषाई लाहे अमल प्रकाशित किया। उन की तहरीक पर अमरीका की अहमदी की लज्ना की सदस्याओं ने डेनमार्क में बनने वाली मस्जिद में बढ़ चढ़ कर कुर्बानी पेश की। इसी तरह बालटीमोर, पीटर्सबर्ग के मिशन इत्यादि को सजाने के लिए भी फण्ड उपलब्ध किए है। यह कहती हैं कि सिस्टर आलिया बताया करती थीं कि चूंकि उस अवधि में 98 प्रतिशत लज्ना नई बैअत कर के जमाअत में शामिल हुई थीं। इसलिए हम ने शुरू में लज्ना को केवल नमाज़ें अदा करने और रमज़ान में रोज़े रखने की नसीहत किया करते थे इसी तरह, पहले हिजाब पहनने के बजाय कुछ साल तक सिर्फ उपयुक्त कपड़े पहनने पर ध्यान केंद्रित करें, पहले अपने कपड़ों को हया वाला बनाओ और फिर अगला कदम हिजाब पर आएगा और पर्दा करो। यह नहीं कि आज कल की तरह जो लज्ना में शुरू हो गया है कि जो पर्दा करती थीं उन्होंने भी अपने पर्दे उतार दिए हैं। उन्होंने चरण बध तरीके से एक चरण से दूसरे चरण में लाने की कोशिश की,

प्रशिक्षित किया।

फिर सिस्टर आलिया ने सभी लज्नी की सदस्यों को कुरआ सादा सिखाने की बहुत कोशिश की। दैनिक कुरआन पढ़ाने के लिए कई कार्यक्रम बनाएं। इसी तरह, जो लज्ना कुरआन पूरा कर लेती थीं उन्हें दैनिक तफसीर का कुछ हिस्सा पढ़ने की तरफ ध्यान दिलातीं। आलिया साहिब की कोशिश से नासरात का सलेबस तैय्यार किया गया। नसरात में धार्मिक ज्ञान सीखने की शौक पैदा हुआ। मरहूम ने मेम्बरों में कुरबानी की रूह पैदा करने की भरपूर कोशिश की। इसी तरह चन्दों की हिसाब भी बहुत महारत के साथ रखती थीं

जब उनसे एक बार जमाअत में प्रवेश करने के बारे में आने वाली कठिनाइयों के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मैंने जमाअत में शामिल होने के बाद कई परीक्षाएं देखी हैं। लेकिन कमज़ोरी दिखाने के बजाय, मैंने हमेशा आशा और अल्लाह तआला की प्रसन्नता पर सहमति दिखाने की कोशिश की, और यही वह सबक है जो मैं लज्ना को पचास से अधिक वर्षों से देती रही हूं। यह लिखती हैं कि उनका व्यक्तित्व दृढ़ता का मीनार था जिस से हम सभी मार्गदर्शन लेते हैं। फिर वह लिखती हैं कि इस्लाम धर्म के सारे संसार में विजय पाने के बारे में उन्हें पूर्ण विश्वास था और वह कहती थी कि जब इस्लाम की जीत आएगी तो जमाअत अहमदिया का जो नारा है मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं यही दुनिया में राज करेगा। इसी तरह, उनका ख़िलाफत के निज़ाम पर पूरा भरोसा था और वह उसे ही इस्लाम की जीतने की कुंजी कहती थीं। यह हमेशा कह करती थीं कि ख़िलाफत की व्यवस्था हमेशा बनी रहेगी और इन्शा अल्लाह इसी से विजय प्राप्त होगी। फिर लिखती हैं कि सैकड़ों फोन कॉल और ख़तो के माध्यम से वह सदस्यों यह संदेश देने और बताने की कोशिश करती थीं।

23 मार्च 2008 ई को मसीह मौऊद दिवस के अवसर पर उन्होंने लज्ना को जो सन्देश दिया वह यह था कि इस साल 1 जनवरी 2008 ई को सारी दुनिया में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को मानने वाले अपनी मस्जिदों तथा मिश्न हाऊस में इकट्ठा होकर शुक्राराने के रूप में नमाज़ तहज्जुद अदा की। हम इस तरह क्यों न करते क्यों कि यह तो वह साल है जिसमें हमारे प्यारे मसीह मौऊद की प्यारी ख़िलाफत को स्थापित हुए एक सौ साल हुए। फिर आगे लिखती हैं कि हे मेरे प्यारे अल्लाह अहमदियत मार्ग में सारी बाधाओं को रूकों को दूर फरमा और हमें वह फत्ह दिखा जिस का तूने वादा किया है। हमारे मसीह मौऊद ने इस जमाअत की बुनियाद रखी और हम को एक जिस्म बना दिया। इसी कारण से हम अहमदी एक दूसरे का दर्द अनुभव करते हैं। आपस में एक दूसरे का साथ देते हैं। एक-दूसरे के लिए दुओं करते हैं। एक की ख़ुशी पर दूसरा ख़ुश होता है और एक की परेशानी पर दूसरा दुखी होता है। हम अल्लाह के फज़्ल तथा कर्म के साथ एक हैं। फिर उन्होंने अपने संदेश में लिखा कि नए अहमदियों के दिया कि वहांसब अहमदी लज्ना को अल्लाह के फज़्ल के साथ मैं ख़ुश नसीब हूं कि मैंने जमाअत की तरक्की अपनी ज़िन्दगी में देखी है। हमें पर अल्लाह तआला का उपकार है कि उस ने हमारी जमाअत को इस्लाम के प्रकाशन तथा प्रचार के लिए चुन लिया है। हम प्रत्येक सप्ताह समय के ख़लीफा की आवाज़ को सुन सकते हैं। और उसके निर्देशों का पालन कर के धर्म और दुनिया की तरक्की को पता सकते हैं। फिर अन्त में उन्होंने लिखा मैं दुआ करती हूं कि हे मेरे मौला ! इस्लाम की विजय के मार्ग आने वाली सभी बाधाओं को दूर फरमा। हमारी हस्ती को हमारे धर्म का सही प्रतिरूप बना और हमें असंख्य धर्म की मदद करने वाला बना। तो इस तरह लज्ना को वहां अमेरिका में जो विशेष हालात है इस में नई बैअत करने वाली हैं अफ्रीकन अम्रीकन हैं उन का जमा करने में इन की प्रमुख भूमिका है।

आपके बेटा उमर शहीद साहिब जो पीटर्सबर्ग के सदर जमाअत हैं। लिखते हैं कि मेरे माता-पिता अहमदियत तथा ख़िलाफत के माध्यम से इस्लाम की रक्षा करने वाले सिपाही थे। मेरी मां आपको लगातार पत्र लिखती थीं। मुझे लिख रहे हैं वह। और मुझे इस तरफ ध्यान दिलाती थीं कि समय के ख़लीफा को ख़त लिखो। और फिर यह लिखते हैं कि दुआ करो कि मैं और मेरी औलाद स्वर्गीया के नक्श कदम पर चलने वाली हो। लिखते हैं कि जमाअत के लोगों ने जितनी अधिक संख्या में मेरी माता के बारे में अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है मुझे पहले यह पता नहीं लगाया कि कितने व्यापक रूप से उन से मुहब्बत करने वाले लोग मौजूद हैं।

वहां के एक अन्य स्थानीय अहमदी, अमेरिकन सिस्टर अज़ीज़ लार्ड हैं। कहती हैं कि इस्लाम अहमदियत स्वीकार करने के बाद उन्होंने अर्थात आलिया शहीद ने एक मिसाली अहमदी के रूप में जीवन व्यतीत किया। जब वह सचिव शिक्षा थी तो उन के कारण से किसी का दिल नहीं करता था कि उन के बनाए हुए शैक्षिक परीक्षा में को ई फेल हो, इसलिए हम सब एक साथ मिल कर टेस्ट की तैय्यारी करते थे। कहती हैं कि मैं आयु में उन से बहुत बड़ी थी लेकिन फिर भी मेरे साथ दोस्ताना रिश्ता था। एक बात कहती हैं उन में मैंने देखी है कि जब कभी कोई ज्ञान वर्धक प्रश्न किया जाता है, तो वह अपनी राय को व्यक्त करने के बजाय, इधर उधर की बातें करने के वह हमेशा इस्लामी शिक्षा जो है उस बारे में बताया करती थीं। ख़ुदा तआला के साथ उन का एक मज़बूत रिश्ता था जिसके कारण लोग उनके पास खिचे चले आते थे।

फिर, सिस्टर जमीला हामिद हैं मुनीर हामिद की पत्नी है। यह भी स्थानीय अमेरिकी अहमदी हैं। यह लिखती हैं कि मुझे यह बहुत पसंद करती थीं। और हमेशा मुझे कहा करती थीं कि तुम बहुत अच्छी लगती हो। कहती हैं कि मेरी माँ की मृत्यु पर मुझे बहुत मुहब्बत भरा ख़त लिखा जिस के कारण मुझे मृत्यु का दर्शन समझने में मदद मिली। फरिशता सीरत थीं। जब भी मदद और सलाह की आवश्यकता होती उन्हें बस एक कॉल की दूरी पर पाया। हमेशा मुझे बतातीं कि जीवन का उद्देश्य जमाअत की सेवा करना है और ख़िलाफत से प्यार होना चाहिए है कि यही इस ज़माना में अल्लाह की रस्सी है। इन के पूर्ण विश्वास और ख़ुदा तआला से मुहब्बत को मैं हमेशा रश्क भरी नज़रों से देखती थी। एत बार मैंने उन से पूछा कि क्या उन्हें मौत से डर लगता है? तो उन्होंने कहा कि जाना तो अपने प्रिय के पास ही है फिर डर किस बात का? उन्हें इस्लाम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के सन्देश का गहरा ज्ञान था जिसे सारी आयु उन्होंने लोगों तक पहुंचा ।

फिर एक अन्य स्थानीय अमेरिकीन अहमदी डाक्टर रशीद अहमद हैं। वह कहती हैं कि वह ख़ुद इस्लामिक शिक्षाओं पर सख्ती से अमल करती थीं लेकिन दूसरों को बड़े प्यार से नसीहत करती थीं। उनकी हर हरकत में अल्लाह तआला का प्यार झलकता था। कहती हैं मुझे एक से अधिक बार उन के घर पर रहने का अवसर मिला, और हम एक साथ नमाज़ पढ़ते थे और कुरआन की तिलावात करते थे, जिसके बाद वह मुझे सिलसिला के ख़लीफाओं की तरफ से आने वाले ख़तो को बहुत मुहब्बत और चाहत से दिखातीं थीं। ख़िलाफत के साथ उनके प्रेम का अन्दाज़ा उन की लिखी कविताओं और भाषणों को सुनकर अच्छी तरह से हो जाता है। कहती हैं कि वह कविताएँ भी लिखती थीं और बहुत धैर्यवान थीं। हर महीने मैं उन्हें फोन कर के हाल पूछती थी। उन की गिरती हुई सेहत के बारे में कहती तो कभी उन्होंने शिकायत नहीं की बल्कि हमेशा अल्लाह तआला के उपकार का वर्णन करतीं और धन्यवाद करती थीं।

फिर इसी तरह एक स्थानीय अमेरिकी अहमदी, सिस्टर अज़ीज़ा अल्हाज रशीद की पत्नी हैं वह कहती है कि सिस्टर आलिया शहीद साहिबा मुहब्बत सब के लिए और नफरत किसी से नहीं की जीती जागती तस्वीर थीं। यद्यपि वह दूसरे शहरों में रहती थीं परन्तु फिर भी मेरी माता के साथ इन की गहरी दोस्ती थी। मेरी माता की वफात के बाद भी उन्होंने यह सम्पर्क कम नहीं किया। मुझे हमेशा इस तरह लगता था कि शायद आलिया साहिबा को पता है कि कब मैं सुस्त होती हूं तो शीघ्र ही ईमान वर्धक ख़त भिजवा दिया करती थीं।

फिर एक अन्य लज्ना मेम्बर ख़िल्लत साहिबा लिखती हैं कि1949 ई में जब मैं पहली बार अमरीका आई तो मुझे आलिया साहिबा से परिचय हुआ। उस सम आठ वर्ष की जब मैं उनसे पहली बार मिली थी। बहुत प्यार करने वाली, मिलनसार और अच्छा प्रभाव छोड़ने वाली वाले व्यक्तित्व थीं। ख़िलाफत के साथ एक लंबा और मज़बूत रिश्ता था। प्रापय हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो के साथ अपने ख़त लिखने का वर्णन करती थीं। लज्ना इमाअल्लाह अमरीका केलिए उन की सेवाएं न भूलने योग्य हैं। अजीब रूहानी व्यक्तित्व थीं और सौ वर्ष आयु होने के बावजूद भी जलसा में शामिल होती थीं जो हम सब के लिए नमूना है।

अल्लाह तआला उन के स्तर ऊंचे करे और उन की नस्ल में भी वह रूह और धर्म की सेवा की भावना पैदा फरमाए जो उन में थी जैसा कि उन के बेटे ने भी इस का वर्णन किया है।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 01 से 07 फरवरी 2019 ई पृष्ठ 5-9)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

इस्लाम अपने गुणों के कारण फैला है ज़ोर से नहीं।

मदीना हिजरत के दौरान ग़ारे सौर में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की सेवा तथा सफर में आप का साथ पाने वाले सौभाग्यवान , वफा के पुतले, बदरी सहाबी हज़रत आमिर बिन फुहैरहः रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की बरकत वाली सीरत का वर्णन जो बेअरे मऊनः में दर्दनाक रूप से शहीद हुए और शहादत का सम्मान पाकर इस्लामी इतिहास में हमेशा के लिए अमर हो गए।

अल्लाह तआला उन के स्तर ऊंचा करता चला जाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 जनवरी 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज मैं आमिर इब्न फुहैरः का ज़िक्र करूंगा इन का काफी लम्बा वर्णन तारीख़ में मिलता है। इस्लाम के इतिहास की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाएं हैं। उन्हें उनका हिस्सा बनने का मौका मिला। और वे घटनाऐं इस तरह की हैं कि उन का विस्तार वर्णन करना आवश्यक भी है।

उनका उपनाम अबू अमरो था, और कबीले अज़द से सम्बन्ध था और हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह तआला के अख़यापी भाई तुफैल बिन अब्दुल्लाह बिन सन्जरत के दास थे। ये भी काले ग़ुलाम थे। अख़यापी भाई वह होते हैं जो मां की तरफ से होते हैं। पिता अलग थे। आप इस्लाम लाने वाले पहले लोगों में से थे। पहले इस्लाम लाने वालों में शामिल थे। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अरकम में जाने से पहले इस्लाम स्वीकार कर चुके थे। और हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो कि बकरियां चराया करते थे। इस्लाम स्वीकार करने के बाद काफिरों की तरफ से आप को बहुत कष्ट पहुंचाए गए। फिर हज़रत अबू बकर रिज़ अल्लाह तआला अन्हो ने उन्हें ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।

मदीना हिजरत के समय जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर ग़ारे सौर में थे, तो आप हज़रत अबू बकर की बकरियां चराया करते थे। हज़रत अबू बकर ने उन्हें आदेश दिया था कि वह बकरियों को हमारे पास लाया करें। इसलिए आप सारा दिन बकरियां चराया करते थे और शाम को हज़रत अबू बकर की बकरिया गुफा के सामने ले जाया करते थे। तो आप दोनों लोग ख़ुद बकरियों का दूध दोह लिया करते थे अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर। जब अब्दुल्लाह बिन अबू बकर इन दोनों अर्थात आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर के पास जाते थे तो हज़रत आमिर बिन फुहैरः उनके पीछे पीछे जाते थे ताकि उन के कदमों के निशान मिट जाएं। पता न लगे कि हज़रत अबू बकर के बेटे कहां जा रहे हैं, काफिर को कोई शक न हो। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अबू बकर सौर गुफ़ा से निकल कर मदीना को रवाना हुए तो उस समय हज़रत आमिर इब्न फुहैरः ने भी उनके साथ हिजरत की। हज़रत अबू बकर ने उन को अपने पीछे बिठा लिया। उस समय उन को रास्ता दिखाने वाले बनू अद्दैल का एक मुश्रिक था।

(असदुल-ग़बाह, खंड 3 पृष्ठ 134, आमिर इब्न फुहैरः प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 2003 ई)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिजरत के बाद हज़रत आमिर इब्न फुहैरः और हज़रत हारिस बिन औस बिन मुअज़ के बीच भाईचारा की स्थापना की। हज़रत आमिर इब्न फुहैरः बदर और उहद में शामिल हुए थे और बेअरे मऊना के अवसर पर चालीस साल की आयु उन को शहादत प्राप्त हुई।

(अत्तबकातुल कुब्रा खंड 3 पृष्ठ 134, आमिर इब्न फुहैरः प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 2003 ई)

हज़रत अबू बकर ने हिजरत करने से पहले सात इस तरह के ग़ुलामों को रिहा किया था, जिन्हें अल्लाह तआला के मार्ग में कष्ट पंहुचाया जाता था, जिनमें से एक हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाह और हज़रत आमिर इब्न फुहैरः थे।

(असदुल-ग़बाह 3 पृष्ठ 319 अब्दुल्लाह बिन उस्मान अबू बकर अल-सिद्दीक़, प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरुत 2003 ई)

हिजरत की घटना का उल्लेख करते हुए, हज़रत आयशा वर्णन करती हैं कि एक दिन हम हज़रत अबू बकर के घर दोपहर के समय बैठे हुए थे, अर्थात अपने घर में बैठे हुए थे। किसी कहने वाले ने हज़रत अबू बकर से कहा कि अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सिर पर कपड़ा ओढ़े हुए आ रहे हैं। आप उस समय हमारे पास आए जब कि आप नहीं आया करते थे। हज़रत अबू बकर ने कहा कि मेरे माता-पिता आप पर कुरबान! ख़ुदा की कसम आप जो इस समय आए हैं तो कोई बहुत बड़ी बात होगी। कहती हैं कि इतने में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पहुंच गए और जब आप पहुंचें तो आप ने अंदर आने की इजाज़त मांगी। हज़रत अबू बकर ने अनुमति दी। आप अंदर आए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू बकर से कहा जो तुम्हारे पास हैं उन्हें बाहर भेज दो। हज़रत अबू बकर ने कहा, अल्लाह के रसूल, मेरे माता-पिता आप पर कुरबान! घर में तो केवल आप ही के घर वाले हैं, अर्थात आइशा और उसकी माँता उम्मे रूमान। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मुझे हिजरत की अनुमति मिल गई है। हज़रत अबू बकर ने कहा, अल्लाह के रसूल! मेरे माता पिता आप पर कुरबान मुझे भी साथ ले चलें। तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम भी मेरे साथ चलो। फिर हज़रत अबी बकर ने फरमाया कि मेरे माता पिता आप पर कुरबान साथ चलना है तो मेरी इन दो सवारियों की उंटनियों में से कोई आप ले लें। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, मैं क़ीमत दे कर लूंगा। हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह ने कहा इसलिए हमने जल्दी से दोनों का सामान तैयार किए और हमने उन्हें तैयार कर के चमड़े के बैग में डाल दिया। हज़रत अबू बकर की बेटी हज़रत अस्मा ने अपनी कमर से कपड़े का एक टुकड़ा काट कर थैले का मुंह बन्द किया इसलिए उन का नाम ज़तुन्निताक हो गया।

कहती हैं फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर सौर गुफा में जा पहुंचे और उस में तीन दिन रातों तक छिपे रहे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबूबकर उन दोनों के पास जाकर रात को ठहरते और उस समय वह एक चतुर और चालाक युवक थे अर्थात कि अच्छी होश वाले थे। और अंधेरे में ही उन के पास चले आते थे। सुबह सुबह अंधेरे मुंह ही उन के पास से। और मक्का में कुरैश के साथ ही सुबह का समय व्यतीत करते थे। जैसे वहीं रात गुज़ारी हो। जो बात भी उन के बारे में अर्थात कुफ्फार केबारे में सुनते वह उस को अच्छी

तरह से समझ लेते और जब मुंह अंधारे हो जाता तो ग़ार में पहुंच कर उन को बता देते थे। मक्का में जो सारा दिन रहते तो जो भी कुफ्फार के षडयन्त्र होते थे वे शाम को आप को बता देते थे। हज़रत अबू बकर का ग़ुलाम, आमिर इब्न फुहैर: बकरियों के झुंडों में से एक दूध वाली बकरी आपके पास चराता रहता था, और जब ईशा के समय से कुछ समय बीतता था, तो वह बकरी को उनके पास लाता था, और वे दोनों ताज़ा दूध पी कर रात व्यतीत करते थे। और यह दूध उन दोनों की दूध देने वाली बकरी का होता। आमिर इब्न फुहैर: रात के पिछले समय गल्ले में चले जाते और बकरियों को आवाज़ देने लग जाते। तीन रातों तक वह इसी तरह करते रहे। और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने और हज़रत अबू बकर ने बनो डैल के कबीला के एक व्यक्ति को रास्ता बताने के लिए मज़दूरी पर रखा और वह बनू अब्द बिन अदि से था। बहुत ही परिचित रास्ता बताने वाला एक विशेषज्ञ था। उस व्यक्ति ने आस बिन वाइल के परिवार के साथ मुअइदा करने के लिए अपना हाथ डुबोया था, और वह कुरैश के काफिर धर्म पर था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह ने उस पर विश्वास किया। यद्यपि वह काफिर था और कुरैश के धर्म पर था, लेकिन बहरहाल आपने उस पर भरोसा किया और अपनी सवारी की ऊंटनी उसके सुपुर्द कर दीं और उस से यही वादा किया कि वह तीन दिन के बाद सुब्ह के समय आप की ऊंटनियों को लेकर ग़ार सौर पहुंचेगा। आमिर बिन फुहैर: और मार्गदर्शक उनके साथ चले। वह मार्गदर्शक इन तीनों को समुद्र के किनारे के रास्ते से ले गया। यह बुखारी की रिवायत है।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल मनाकिब अनसार बाब हिजरत हदीस 3905)

सुराका बिन मालिक बिन जुअशम कहते थे कि हमारे पास कुरैश के संदेशवाहक आए जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर उन दोनों में से एक का बदला निर्धारित करने लगे उस व्यक्ति के लिए जो उनको कत्ल करे या कैद करे। इसी समय मैं अपनी क़ौम बनू मुदलज में बैठा हुआ था यही बातें हो रही थीं कि किस तरह पकड़ा जाएगा, कत्ल किया जाए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हुज़ूर पर किस तरह हमला किया जाए। कहते हैं यह बातें हमारी मज्लिस में हो रही थीं कि एक आदमी आया और आकर हमारे पास खड़ा हो गया और हम बैठे थे। कहने लगा सुराका मैंने अभी समुद्र के किनारे की तरफ कुछ साए देखे हैं और मैं समझता हूं कि वही मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथी हैं। सुराका कहते थे मैंने पहचान लिया कि वही हैं मगर मैंने उससे कहा कि वह हरगिज़ नहीं हैं बल्कि तुम ने अमुक को देखा है जो हमारे सामने गए थे और उसकी बात टाल दी। फिर मैं उस मज्लिस में कुछ देर तक ठहरा रहा। सुराका को उस समय लालच भी थी कि कहीं यह न चला जाए यह ना जाए और फिर यह इनाम का हकदार ठहर जाए। तो कहते हैं बहरहाल मैंने टाल दिया कुछ देर के बाद उठा और घर गया और अपनी दासी से कहा कि मेरी घोड़ी निकालो। वह टीले के परे ही है। अर्थात पीछे जो एक छोटा सा टीला था उसकी तरफ मेरी घोड़ी ले जाओ और वहीं रुको वहां उसको मेरे लिए रोके रखो। अत: मैंने अपना भाला लिया और उसकी नोक को नीचे की तरफ झुकाया। मैंने भाला को झुकाया और उस के उपर के भाग को नीचे झुकाया और इस तरह अपनी घोड़ी के पास पहुंचा और उस पर सवार हो गया। मैंने उसको चमकाया अर्थात थोड़ी से थपकी दी और उस को दौड़ाया और वह सरपट दौड़ती हुई मुझे ले गई। यहां तक कि जब उनके निकट पहुंचा अर्थात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट पहुंचा मेरी घोड़ी ने ऐसी ठोकर खाई कि मैं उस से गिर पड़ा। मैं उठ खड़ा हुआ और अपनी तरकश की तरफ हाथ झुका कर मैंने उस से तीर निकाले और उस से शगुन ली कि क्या मैं उन को नुकसान पहुंचा सकता हूं या नहीं अर्थात जो मेरे कत्ल या पकड़ने का इरादा है वह मैं कर सकूंगा या नहीं। कहता है अत: वही निकला जिसे में नापसन्द करता था अर्थात मेरा शगुन मेरे विरुद्ध निकला। यही कि मैं नहीं पकड़ सकता।

कहता है मैं अपनी घोड़ी पर सवार हो गया और पांसा के विरुद्ध काम किया जो शगुन निकला था उस के विरुद्ध काम किया। घोड़ी सरपट दौड़ते हुए मुझे लिए जा रही थी और मैं इतनी निकट होगया कि मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कुरान पढ़ते हुए सुना। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इधर उधर नहीं देख रहे थे। और हज़रत अबू बकर बार बार इधर उधर देख रहे थे। थोड़ी देर बाद किया हुआ जब मैं निकट पंहुचा तो मेरी घोड़ी की अगली टागें ज़मीन में घटनों तक धंस गईं और मैं गिर पड़ा। फिर मैंने घोड़ी को डांटा और उठ खड़ा हुआ। वह अपनी टांगें ज़मीन से न निकाल सकती थी। अन्त में जब वह सीधी खड़ी हुई और बड़ा ज़ोर लगा कर सीधी खड़ी हुई तो उस की दोनों टांगों से धूल उठी और फैल गई अर्थात इतनी धंसी हुई थी कि निकलाते हुए ज़ोर लगाया तो मिट्टी जो बाहर निकली वह इतनी अधिक थी कि लगता था कि धूल छा गई। कहता है कि अब मैंने दोबारा तीरों से फाल ली तो वही तीर निकला जिस में ना पसन्द करता था अर्थात जो मैं चाहता था उस के विरुद्ध फाल निकली अर्थात कि मैं आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर काबु नहीं पा सकता था। तब मैं ने उन्हें आवाज़ दी कि तुम अमन में हो। मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आवाज़ दे कर कहा कि अब आप अमन में हैं। और फिर आप ठहर गए। अर्थात मेरा कोई इरादा नहीं थी मेरा कोई बुरा इरादा नहीं था। कहते हैं अब मैं अपनी घोड़ी पर सवार हो कर आप के पास गया। जब नियत ठीक हो गई तो घोड़ी भी चलने लगी और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंची या वे लोग भी कुछ देर पीछे आए या ठहर गए। कहता है कि उन तक पहुंचने में मुझे जो रोकें पेश आईं उन को देख कर मेरे दिल में विचार आया कि ज़रूर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही बोल बाला होगा। मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कहा कि आप की क़ौम ने आप के बारे में बदला निर्धारित किया है। और मैंने उन को वे सब चीज़ें बताई जो कुछ लोग उन से करने का इरादा रखते थे। अर्थात कुफ्फार के जो बुरे इरादे थे उस के बारे में बताया। और फिर मैंने उन के सामने सफर का सामान पेश किया। मैंने कहा यह सामान है आप सफर पर जा रहे हैं तो सफर को खाने पीने का कुछ सामान पेश है मगर उन्होंने मुझ से न लिया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन्कार कर दिया कि नहीं। उन्हें ज़रूरत नहीं। और न ही मुझ से कोई मांग की सिवाए इसके कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह फरमाया कि हमारे सफर के बारे में इस बात को छुपा कर रखना। अर्थात किसी को न बताना कि किस रास्ते से जा रहे हैं। कहता है कि मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि और अब वह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सफर कर रहे थे कि आप मेरे लिए अमन की तहरीर लिख दें। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आमिर बिन फुहैर: जो हब्शी ग़ुलाम थे आज़ाद थे फरमाया कि तहरीर लिख दो। और उस ने चमड़े के एक टुकड़े पर लिख दिया इस के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रवाना हो गए।

इब्ने शहाब से रिवायत है कि उरवह बिन ज़ुबैर ने मुझ से बताया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रास्ता में हज़रत ज़ुबैर से मिले जो मुसलमानों के एक काफिला के साथ शाम का व्यापार करके वापस आ रहे थे। हज़रत ज़ुबैर ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाह को सफेद कपड़े पहनाए और मदीना में मुसलमानों से सुन लिया कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से निकल पड़े हैं। इसलिए वह हर सुब्ह

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

हुर्रत मैदान तक जाया करते थे और वहां आप का इन्तज़ार करते थे। यहां तक कि दोपहर की गर्मी आप को लौटा देती थी। अर्थात दोपहर तक इन्तज़ार करते रहते थे सूरज जब बहुत अधिक चढ़ जाता था तो गर्मी के कारण से वापस चले जाते थे। और इस इन्तज़ार में थे कि कब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना पहुंचें। कहते हैं कि एक दिन इन का बहुत समय तक इंतजार करने के बाद वापस लौटे और अपने घरों की तरफ लौटे तो एक यहूदी व्यक्ति अपने एक महल पर कुछ देखने के लिए चढ़ा, उसने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के साथियों को देखा जो सफेद कपड़े पहने हुए थे। सुराब उन से धीरे-धीरे हट रहा था। अर्थात दूर से एक शक्ल दिखाई दे रही थी लेकिन धीरे-धीरे शक्लें स्पष्ट हो रही थीं। यहूदी से रहा न गया अपने आप ज़ोर से कहने लगा हे अरब के लोगो! मदीना वालों को आवाज़ दी कि यह तुम्हारी वह सरदार है जिस का तुम इन्तज़ार कर रहे थे। पता था उस को कि मुसलमान रोज़ाना एक जगह जाते हैं और प्रतीक्षा में एक साथ इकट्ठा होते हैं। यह सुनते ही मुसलमान अपने हथियारों की तरफ लपके और हुर्रह के मैदान ममें आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्वागत किया। आप उन्हें साथ लिए हुए अपनी दाएं तरफ मुड़े और बनी अमरो बिन औफ के मुहल्ला में उतरे और यह सोमवार का दिन था, और रबी उलअव्वल का महीना था। हज़रत अबू बकर लोगों से मिलने कि लिए खड़े हुए और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोश बैठे रहे। और अन्सार में से वे लोग जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं देखा था आए और हज़रत अबू बकर को सलाम करने लगे यहां तक कि धूप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पड़ने लगी। अर्थात काफी देर हो गई। धूप अधिक चढ़ आई। जो थोड़ा साया था वह दूर हो गया तो हज़रत अबू बकर आए और उन्होंने अपनी चादर से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर साया किया। उस समय लोगों ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहचाना। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बनी अमरो बिन औफ के मुहल्ला में दस से कुछ अधिक दिन ठहरे और वह मस्जिद बनाई जिस की बुनियाद तक्वा पर आधारित थी। और इस में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ें पढ़ीं।

फिर आप अपनी ऊँटनी पर सवार हुए और लोग आपके साथ पैदल चलने लगे और ऊंटनी मदीना में वहां जाकर बैठी जहाँ अब मस्जिद नबवी है। उन दिनों वहां कुछ मुसलमान नमाज़ पढ़ते थे और वह सहल और सुहैल के खजूरें सुखाने का स्थान था। एक खुला मैदान था जहाँ यह दो लड़के अपनी फसल सुखाया करते थे जो दे यतीम बच्चे थे। ये बच्चे हज़रत साद इब्न ज़ुरारत की परवरिश में थे। जब आपकी ऊंटनी ने आपको वहाँ बिठाया तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर अल्लाह ने चाहा तो यहीं हमारा निवास होगा। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन दो लड़को बुलाया और उन से इस स्थान की कीमत का पता किया ताकि इस को मस्जिद बनाएं तो उन दोंनों ने कहा कि नहीं हे अल्लाह के रसूल हम आप को यह ज़मीन मुफ्त देते हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन से यह स्थान मुफ्त लेने से मना कर दिया और उन से खरीदा और मस्जिद बनाई। और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस मस्जिद को बनाने के लिए लोगों के साथ ईंटें ढोने लगे और जब ईंटें ढो रहे थे तो साथ साथ कहते जाते थे

هٰذَا الْحِمَالُ لَا حِمَالَ خَيْبَرَ هٰذَا اَبَرُّ رَبَّنَا وَاَطْهَرَ

कि यह बोझ ख़ैबर के बोझ जैसा नहीं है बल्कि हमारे रब्ब यह बोझ बुहत भला और पवित्र है। इसी प्रकार फरमाते थे

اَللّٰهُمَّ اِنَّ الْاَجْرَ اَجْرُ الْاٰخِرَة فَارْحَمِ الْاَنْصَارَ وَالْمُهَاجِرَة

हे अल्लाह वास्तविक सवाब तो आख़रत का सवाब है। इसलिए तू अन्सार तथा मुहाजरीन पर रहम फरमा। यह भी बुख़ारी की रिवायत है।"

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल मनाकिब अल्अंसार हदीस 3906)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने भी इस हिजरत की घटना के बारे में फरमाया है। आप ने इसे अपने विभिन्न अंदाज़ में वर्णन फरमाया है इसलिए थोड़ा सा यह विस्तार भी में वर्णन कर देता हूं

"अन्तत: मक्का मुसलमानों से ख़ाली हो गया, केवल कुछ दास, स्वयं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हज़रत अबू बक्र[रज़ि॰] और हज़रत अली[रज़ि॰] मक्का में रह गए। जब मक्का के लोगों ने देखा कि अब शिकार हमारे हाथ से निकला जा रहा है तो सरदार पुन: एकत्र हुए तथा परामर्श करने के पश्चात उन्होंने यह निर्णय किया कि अब मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का वध कर देना ही उचित है। ख़ुदा तआला के विशेष चमत्कार से आप का वध करने की तिथि आप की हिजरत की तिथि के अनुकूल पड़ी। जब मक्का के लोग आपके घर के सामने आप का वध करने के लिए एकत्र हो रहे थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात के अंधेरे में हिजरत के इरादे से अपने घर से बाहर निकल रहे थे। मक्का के लोग अवश्य सन्देह करते होंगे कि उनके इरादे की सूचना मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी मिल चुकी होगी, परन्तु फिर भी जब आप उनके सामने से गुज़रे तो उन्होंने यही समझा कि यह कोई अन्य व्यक्ति है और आप पर आक्रमण करने के स्थान पर सिमट-सिमट कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से छुपने लग गए ताकि उनके इरादों की सूचना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न पहुँच जाए। उस रात से एक दिन पूर्व ही अबू बक्र[रज़ि॰] को भी आप के साथ हिजरत करने की सूचना दे दी गई थी अत: वह भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिल गए। दोनों मिलकर थोड़ी देर में मक्का से रवाना हो गए तथा मक्का से तीन-चार मील पर 'सौर' नामक पहाड़ी के एक सिरे पर एक गुफ़ा में शरण ली।[231] जब मक्का के लोगों को मालूम हुआ कि मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मक्का से चले गए हैं तो उन्होंने एक सेना एकत्र की तथा आप का पीछा किया। उन्होंने एक खोजी अपने साथ लिया जो आप की खोज लगाते हुए 'सौर' पर्वत पर पहुँचा। उसने वहाँ उस गुफ़ा के पास पहुँच कर जहाँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अबू बक्र[रज़ि॰] के साथ छुपे हुए थे, पूर्ण विश्वास के साथ कहा कि या तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस गुफ़ा में है या आकाश पर चढ़ गया है। उस की इस घोषणा को सुन कर अबू बक्र[रज़ि॰] का हृदय बैठने लगा और उन्होंने धीमे स्वर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा— शत्रु सर पर आ पहुँचा है और अब कुछ ही क्षणों में गुफ़ा में प्रवेश करने वाला है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया— لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا अबू बक्र डरो नहीं ख़ुदा हम दोनों के साथ है। अबू बक्र[रज़ि॰] ने उत्तर में कहा— हे अल्लाह के रसूल! मैं अपने प्राणों के लिए नहीं डरता क्योंकि मैं तो एक साधारण व्यक्ति हूँ, मारा गया तो एक व्यक्ति ही मारा जाएगा। हे अल्लाह के रसूल! मुझे तो केवल यह भय है कि यदि आप के प्राण को कोई आघात पहुँचा तो संसार से आध्यात्मिकता और धर्म का नाम मिट जाएगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया— कोई परवाह नहीं, यहाँ हम दो ही नहीं तीसरा ख़ुदा भी हमारे साथ है। चूंकि अब समय आ पहुँचा था कि ख़ुदा तआला इस्लाम को बढ़ाए और उन्नति दे। मक्का वालों के लिए छूट का समय समाप्त हो चुका था। ख़ुदा तआला ने मक्का वालों की आँखों पर पर्दा डाल दिया तथा उन्होंने खोजी से उपहास आरम्भ कर दिया और कहा— क्या उन्होंने इस खुले स्थान पर शरण लेना थी, यह कोई शरण का स्थान नहीं है फिर यहाँ साँप बिच्छुओं की बहुतात है, यहाँ कौन समझदार व्यक्ति शरण ले सकता है तथा गुफ़ा में झांके बिना ही खोजी की खिल्ली उड़ाते हुए वापस लौटे।

दो दिन उसी गुफ़ा में प्रतीक्षा करने के पश्चात् पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार रात्रि के समय गुफ़ा के पास सवारियां पहुँचाई गईं तथा दो तीव्रगामी ऊँटनियों पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के साथी रवाना हुए। एक ऊँटनी पर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

व सल्लम और आप को मार्ग दिखाने वाला व्यक्ति सवार हुआ और दूसरी ऊँटनी पर हज़रत अबू बक्र[रज़ि॰] और उन के नौकर आमिर बिन फुहैरा सवार हुए। मदीना की ओर प्रस्थान करने से पूर्व रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना मुख मक्का की ओर किया, उस पवित्र शहर में जिसमें आपने जन्म लिया जिसमें आप का अवतरण हुआ और जिसमें हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के युग से आपके पूर्वज रहते चले आए थे, आप ने अन्तिम दृष्टि डाली और बड़े दु:ख के साथ शहर को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया हे मक्का की बस्ती! तू मुझे सब स्थानों से अधिक प्रिय है परन्तु तेरे लोग मुझे यहाँ रहने नहीं देते। उस समय हज़रत अबू बक्र[रज़ि॰] ने भी नितान्त खेद के साथ कहा — इन लोगों ने अपने नबी को निकाला है अब ये अवश्य तबाह होंगे।

जब मक्का वाले आप की खोज में असफल रहे तो उन्होंने घोषणा कर दी कि जो कोई मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) या अबू बक्र[रज़ि॰] को जीवित या मृत वापस ले आएगा तो उसे सौ ऊँटनियां पुरस्कार स्वरूप दी जाएँगी। इस घोषणा की सूचना मक्का के आस-पास के क़बीलों को पहुँचा दी गई। अत: सुराक़ा बिन मालिक एक बद्दू सरदार इस पुरस्कार के लालच में आप के पीछे रवाना हुआ। खोज लगाते-लगाते उसने आप को मदीना के मार्ग पर जा लिया। जब उस ने दो ऊँटनियों और उन के सवारों को देखा तथा समझ लिया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके साथी हैं। उसने अपना घोड़ा उनके पीछे दौड़ा दिया, परन्तु मार्ग में घोड़े ने ज़ोर से ठोकर खाई और सुराक़ा गिर गया। सुराक़ा बाद में मुसलमान हो गया था। वह अपना वृत्तान्त स्वयं इस प्रकार वर्णन करता है।"

(दीबाचा तफसीरुल कुरआन अन्वारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 222-224)

और फिर वह सारी घटना जो सुराका के हवाला से पहले वर्णन हो चुकी है वह आपने वर्णन की है। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि

"अत: जब आमिर बिन फुहैरह: ने हुज़ूर के आदेश पर अभयदान पत्र लिख दिया। तो उस समय सुराक़ा जब लौटने लगा तो उसी समय अल्लाह तआला ने आं हज़रत सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम पर सुराक़ा की भावी परिस्थितियां परोक्ष से प्रकट कर दीं।"(अल्लाह तआला ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर परोक्ष के माध्यम से प्रकट फरमाया कि भविष्य में सुराक़ा के साथ क्या होने वाला है और उस के अनुसार आप ने उसे फरमाया। सुराक़ा उस समय क्या हाल होगा जब तेरे हाथों में 'किस्रा' के कंगन होंगे। सुराक़ा ने स्तब्ध हो कर पूछा किस्रा बिन हुरमुज़ ईरान के बादशाह के? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया— हाँ। आप की यह भविष्यवाणी लगभग सोलह, सत्रह वर्ष के पश्चात् अक्षरश: पूरी हुई।

सुराक़ा मुसलमान होकर मदीना आ गया। रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मृत्योपरान्त पहले हज़रत अबू बक्र[रज़ि॰] फिर हज़रत उमर[रज़ि॰] ख़लीफ़ा हुए। इस्लाम की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा देख कर ईरानियों ने मुसलमानों पर आक्रमण आरम्भ कर दिए और इस्लाम के कुचलने के स्थान पर इस्लाम के मुकाबले में स्वयं कुचले गए। किस्रा की राजधानी इस्लामी सेनाओं के घोड़ों की टापों से रौंदी गई तथा ईरान के ख़ज़ानें मुसलमानों के क़ब्ज़े में आए। उस ईरानी शासन का जो माल इस्लामी सेनाओं के अधिकार में आया उसमें वे कंगन भी थे जिन्हें किस्रा ईरानी नियम के अनुसार राज सिंहासन पर बैठते समय पहना करता था। सुराक़ा मुसलमान होने के पश्चात् अपनी इस घटना को जो रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत के समय उसके सामने आई थी मुसलमानों को बड़े गर्व के साथ सुनाया करता था तथा मुसलमान इस बात से अवगत थे कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसे सम्बोधित करके फ़रमाया था— सुराक़ा उस समय तेरा क्या हाल होगा जब तेरे हाथ में किस्रा के कंगन होंगे। हज़रत उमर[रज़ि॰] के सामने जब पराजित शत्रु से ज़ब्त किए हुए माल लाकर रखे गए तथा उसमें उन्होंने किस्रा के कंगन देखे तो सारा दृश्य आप की आँखों के सामने घूम गया। वह अशक्त और निर्बलता का समय जब ख़ुदा के रसूल को अपनी जन्मभूमि छोड़ कर मदीना आना पड़ा था, वह 'सुराक़ा' और अन्य लोगों का आपके पीछे इसलिए घोड़े दौड़ाना कि आप का वध करके या जीवित किसी भी अवस्था में मक्का वालों तक पहुँचा दें तो वे सौ ऊँटों के स्वामी हो जाएँगे, उस समय आप का 'सुराक़ा' से कहना— सुराक़ा उस समय तेरा क्या हाल होगा जब तेरे हाथों में किस्रा के कंगन होंगे। कितनी बड़ी भविष्यवाणी थी कितना उज्ज्वल भविष्य था। हज़रत उमर[रज़ि॰] ने अपने सामने किस्रा के कंगन देखे तो उनकी आँखों के सामने ख़ुदा की क़ुदरत घूम गई। उन्होंने कहा— 'सुराक़ा' को बुलाओ। सुराक़ा बुलाए गए तो हज़रत उमर[रज़ि॰] ने उन्हें आदेश दिया कि वह किस्रा के कंगन अपने हाथों में पहनें। सुराक़ा ने कहा— हे ख़ुदा के रसूल के ख़लीफ़ा! मुसलमानों के लिए सोना पहनना वर्जित है। हज़रत उमर[रज़ि॰] ने फ़रमाया हाँ वर्जित तो अवश्य है परन्तु इन अवसरों के लिए नहीं। अल्लाह तआला ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तुम्हारे हाथ में सोने के कंगन दिखाए थे, या तो तुम यह कंगन पहनोगे या मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। सुराक़ा की आपत्ति तो मात्र शरीअत की समस्या के कारण थी अन्यथा वह स्वयं भी रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी को पूरा होते देखने के लिए उत्सुक था। सुराक़ा ने वे कंगन अपने हाथों में पहन लिए मुसलमानों ने इस महान भविष्यवाणी को पूरा होते अपनी आँखों से देखा।"

(दीबाचा तफसीरुल कुरआन अन्वारुल उलूम जिल्द 20 पृष्ठ 222-226)

कुछ पुस्तकों के अनुसार सुराक़ा बिन मालिक को किस्रा के कंगन पहनाए जाने वाले शब्द हिजरत के अवसर पर नहीं फरमाए थे बल्कि जिस समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हुनैन तथा तायफ से वापस आ रहे थो तो जिअराना के स्थान पर फरमाए।

(बुख़ारी व्याख्या अल्किरमानी भाग 14 पृष्ठ 178 किताब बदउल ख़लक बाब अलामात अन्नबुव्वत फिल इस्लाम हदीस 3384 प्रकाश दारुल कुतुब अल्इिल्मया बैरूत 1981 ई)

लेकिन यह आम तौर रिवायत यही है जो पहले वर्णन हो चुकी है कि हजरत के अवसर पर ही कहा था हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला ने लिखा है।

जब आमिर बिन फ़ुहैरह मदीना में आए तो वह यहां आकर बीमार हो गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की तो आप ठीक हो गए। हज़रत आयशा वर्णन करती हैं कि जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हिजरत कर के मदीना आए तो उनके कुछ साथी बीमार हो गए। हज़रत अबू बकर, हज़रत आमिर इब्न फुहैर:, हज़रत बिलाल बीमार हो गए। हज़रत आयशा ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इन की बीमारी का पता करने की आज्ञा मांगी तो आप ने इस की आज्ञा दी। हज़रत आयशा ने हज़रत अबू बकर से पूछा आप का क्या हाल है तो उन्होंने जवाब में यह शेअर पढ़ा।

اِنِّیۡ وَجَدۡتُ الۡمَوۡتَ قَبۡلَ ذَوۡقِهٖ
اِنَّ الۡجَبَانَ حَتۡفُهٗ مِنۡ فَوۡقِهٖ

अर्थात कि प्रत्येक व्यक्ति जब अपने घर में सुबह को उठता है, तो उसे सुप्रभात कहा जाता है। यहां तक की मृत्यु उसके जूते के तस्मे जितनी क़रीब होती है। यानी जब वह सोत कर उठता है, तो वह ऐसी स्थिति में होता है कि मौत एक दिन आनी ही आनी है।

फिर आपने हज़रत आमिर बिन फुहैर: से उनका हाल पूछा तो उन्होंने यह शेर पढ़ा।

اِنِّیۡ وَجَدۡتُ الۡمَوۡتَ قَبۡلَ ذَوۡقِهٖ
اِنَّ الۡجَبَانَ حَتۡفُهٗ مِنۡ فَوۡقِهٖ

निश्चित रूप से, मैंने मृत्यु को उसे चखने से पहले पाया है, निश्चित रूप से बुज़दिल की मृत्यु अचानक आती है। अर्थात बहादुर हर बार मौत के लिए तैयार रहता है और बुज़दिल इस के लिए तैयार नहीं होता।

फिर आपने हज़रत बिलाल से उनका हाल पूछा, तो उन्होंने यह शेर पढ़ा।

یَالَیۡتَ شِعۡرِیۡ هَلۡ اَبِیۡتَنَّ لَیۡلَةً
بِفَجٍّ وَحَوۡلِیۡ اِذۡخِرٌ وَّ جَلِیۡلُ

काश मुझे पता हो कि मैं कोई दूसरी रात मक्का की वादी में व्यतीत करूंगा और मेरे आसपास इज़ख़िर तथा जलील(मक्का की घास(हो।

फिर आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आईं और आपको इन लोगों की बातें वर्णन कीं। बताया कि हज़रत अबू बकर ने यह कहा, आमिर इब्न फुहैर: ने यह कहा, हज़रत बिलाल ने यह कहा तो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आकाश की तरफ देखा और यह दुआ की।

اَللّٰهُمَّ حَبِّبۡ اِلَیۡنَا الۡمَدِیۡنَةَ کَمَا حَبَّبۡتَ اِلَیۡنَا مَکَّةَ اَوۡ اَشَدَّ ۔ اَللّٰهُمَّ بَارِکۡ لَنَا فِیۡ صَاعِهَا وَفِیۡ مُدِّهَا وَانۡقُلۡ وَبَاءَهَا اِلَی مَهۡیَعَةَ ۔

हे अल्लाह! मदीना को हमें इतना ही प्यारा बना दे जैसा तूने मक्का को हमारे

लिए प्रिय बनाया था या उस से अधिक। हे अल्लाह हमारे लिए इसके साअ में और उस के मुद में (वज़नों के माप हैं) बरकत दे और मदीना को हमारे लिए एक स्वस्थ वाला स्थान बना दे और इस की बीमारी को महयअ स्थान की तरफ भेज दे अर्थात हम से दूर कर दे।

(मुस्नद अहमद बिन हंबन जिल्द 10 पृष्ठ 101-102 हदूस 25092 मस्नद आयशा प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलमिया बैरूत 2008 ई)

हज़रत आमिर बिन फुहैरह बैअर मऊन: के घटना में शहीद हुए थे। जब वे लोग बैअर मऊन: में कत्ल किए गए तो हज़रत अमरो बिन उमय्या ज़मरी कैद किए गए तो आमिर बिन तुफैल ने उन से पूछा ये कौन हैं? और उस ने एक कत्ल होने वाले की तरफ इशारा किया तो उमरो बिन उमय्या ने उत्तर दिया कि यह आमिर बिन फुहैरह हैं। आमिर बिन तुफैल ने कहा कि मैंने देख अर्थात आमिर बिन फुहैरह को देखा वह कत्ल किए जान के बाद आसमान की तरफ उठाए गए हैं। यहां तक कि मैं अब भी देख रहा हूं कि आसमान उन के और ज़मीन के मध्य है फिर वह ज़मीन पर उतारे गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उन की ख़बर पहुंची और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन की ख़बर सहाबी को दी और फरमाया तुम्हारे साथी शहीद हो गए और उन्होंने अपने रब्ब से दुआ की कि हे हमो रब्ब हमारे बारे में हमारे भाइयों को बता दे कि हम तुझ से खुश हो गए और तू हम से ख़ुश हो गया । अत: अल्लाह तआला ने उन के बारे में बता दिया।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी हदीस 4093)

यह बुखारी भी बुख़ारी की रिवायत है। ग़ैर को भी अल्लाह ने यह दृश्य दिखाया जिस तरह कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह सूचना मिली थी।

हज़रत आमिर बिन फुहैर: को किस ने शहीद किया इस बारे में मतभेद है। कई रिवायतों में आप को आमिर बिन तुफैल ने शहीद किया जिस ने यह बात बताई है।

(इस्तियाब जिल्द 2 पृष्ठ 796 आमिर इब्न फुैरह प्रकाशक दारुल जैल बैरूत 1992 ई)

आमिर इब्न तुफैल ने ही पूछा था न कि किस न शहीद किया था। यह दुश्मनों में से थे जब कि दूसरी रिवायत से पता चलता है कि आप को जब्बार बिन सलमा ने शहीद किया था। बहरहाल बेअर मऊना के समय यह शहीद हुए।

(इस्तियाब जिल्द 1 पृष्ठ 229-230 जब्बार इब्न सलमा प्रकाशक दारुल जैल बैरूत 1992 ई)

हजरत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने हज़रत आमिर बिन फुहैर: की शहादत की घटना का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि

"अत: देख लो इस्लाम ने तलवार के ज़ोर से विजय प्राप्त नहीं की, बल्कि इस्लाम ने उच्च शिक्षा के माध्यम से जीत हासिल की जो दिलों में उतर जाती थी और नैतिकता में एक महान परिवर्तन पैदा कर देती थी। एक सहाबी कहते हैं कि मेरे मुस्लिम होने का कारण केवल यह था कि मैं उस क़ौम में मेहमान ठहरा हुआ था, जिस ने ग़द्दारी करते हुए मुसलमानों के सत्तर क़ारी शहीद कर दिए थे। जब उन्होंने मुसलमानों पर हमला किया, तो कुछ उन में से ऊंचे टीले पर चढ़ गए और कुछ उन के मुकाबला में खड़े हो गए। चूंकि दुश्मन बड़ी संख्या में थे और मुसलमान बहुत कम थे और वे भी निहत्थे और बिना सामान के। इसलिए उन्होंने सभी मुसलमानों को एक एक कर के शहीद कर दिया। अंत में, सिर्फ एक सहाबी रह गए जो हिजरतमें आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर के आज़ाद किए ग़ुलाम थे, उनका नाम आमिर इब्न फुहैर: था। कई लोगों ने मिलकर उन्हें पकड़ लिया और एक शख्स ने ज़ोर से भाला उन के सीने में मारा। भाले का निकलना था कि उन की ज़बान से अपने आप यह शब्द निकला कि फुज़तो व रब्ब कअब अर्थात काबा के रब्ब की कसम में सफल हो गया। जब मैंने उन की ज़बान से यह शब्द सुना तो मैं हैरान हो गया और मैंने यह कहा कि यह आदमी अपने रिश्तेदारों से दूर अपने बीवी बच्चों से दूर इतनी बड़ी मुसीबत में पड़ा हुआ है और भाला इस के सीने में मारा गया है मगर इस ने मरते समय अगर कुछ कहा तो केवल इतना कि कआबा के रब्ब की कसम में सफल हो गया। क्या यह आदमी पागल तो नहीं।? अत: मैंने कुछ अन्य लोगों से पूछ यह क्या बात है इस के मुंह से इस तरह की बात क्यों निकली? उन्होंने ने कहा कि तुम नहीं जानते यह मुसलमान लोग वास्तव में पागल हैं। जब यह ख़ुदा तआला की राह में मरते हैं तो समझते हैं कि ख़ुदा तआला उन से राज़ी हो गया और उन्होंने सफलता प्राप्त कर ली। यह कहते हैं कि मेरी तबीयत पर इस घटना का इतना प्रभाव हुआ कि मैंने फैसला कर लिया कि मैं इन लोगों का केन्द्र जाकर देखूंगा। और ख़ुद उन लोगों के धर्म का अध्ययन करूंगा। अत: मैं मदीना पहुंचा और मुसलमान हो गया। सहाबा कहते हैं कि इस घटना का कि एक आदमी के सीने में भाला मारा जाता है और वह देश से कोसों दूर है उस को कोई रिश्तेदार उस के पास नहीं है और उस की ज़बान से निकलता है फुज़तो व रब्ब कअब जब यह आदमी इस हमला के बाद मुसलमान हुआ था तो उस की तबीयत पर इतना प्रभाव था कि जब यह घटना सुनाया करता और फुज़तो व रब्ब कअब के शब्द पर पहुंचता तो इस घटना के प्रभाव के कारण अचानक इस का शरीर कांपने लगता और आंखों से आंसू जारी हो जाते। हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं। "इस्लाम अपने गुणों के कारण के फैला है ज़ोर से नहीं।"

(उद्धरित सैर रूहानी अन्वारुल उलूम जिल्द 22 पृष्ठ 250-251)

यह भी कहा जाता है कि हज़रत आमिर इब्न फुहैर: की शहादत के समय आपके मुंह से जो शब्द निकले, उन में फुज़तो व रब्ब कअब और फुज़तो वल्लाह दोनों शब्द मिलते हैं। दोनों रिवायतें हैं और ये शब्द और सहाबा के मुंह से भी निकले थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने इसका भी उल्लेख किया है और यह कहते हुए आप फरमाते हैं कि,

"हमें तारीख़ से पता चलता है कि सहाबा जंगों में इस तरह जाते कि उन्हें पता होता कि जंग में शहीद होना उन के लिए ख़शी तथा प्रसन्नता की बात है अत: तारीख़ में इस तरह की कई घटनाए आती हैं कि उन्होंने ख़ुदा की राह में मारे जाने को ही अपने लिए साक्षात प्रसन्नता विचार किया जैसे वे हाफिज़ जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरब के मध्य में एक क़बीले की तरफ तब्लीग़ के लिए भेदे थे उन में हराम बिन मिलहान इस्लाम का सन्देश लेकर कबीला आमिर के रईस आमिर बिन तुफैल के पास गए और बाकी सहाबी पीछे रहे। आरम्भ में आमिर बिन तुफैल और उन के भाइयों और उन के साथियों ने मुनाफिकाना रूप से उन की आवभगत की परन्तु जब वह तसल्ली से बैठ गए और तब्लीग़ करने लगे तो उन में से कुछ शरारतियों ने एक शरारती को इशारा किया और उस ने इशारा पाते है हज़रत हमार बिन मिलहान पर पीछे से भाले से वार किया गिरते समय उन की ज़बान से अपने आप निकला कि फुज़तो व रब्ब कअब मुझे कअबा के रब्ब की कसम है मैं नजात पा गया। फिर उन शरारतियों ने बाक़ी सहाबा को घेर लिया और उन पर हमला करना शुरू कर दिया? इस अवसर पर हज़रत अबू बकर के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत आमिर बिन फुहैर: जो हिजरत के सफर में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे उन के बारे में वर्णन आता है कि बल्कि ख़ुद उन का कातिल जो बाद में मुसलमान हो गया अपने मुसलमान होने का कारण यह वर्णन करता है कि जब मैंने आमिर बिन फुहैर: को शहीद किया तो उन के मुंह से अपने आप निकला फुज़तो व रब्ब कअब अर्थात ख़ुदा की कसम मैं अपने अभिलाषा को पहुंच गया। इन घटनाओं से पता चलता है कि सहाबा के लिए मौत का दु:ख का करण होने की बजाय सुख का कारण होती थी।

(एक आयत की मआरिफ वाली व्याख्या, अन्वारुल उलूम भाग 18 पृष्ठ 612-613)

अत: बहुत भाग्यशाली थे, वे लोग और विशेष रूप से आमिर इब्न फ़ुहैर: जिन्हें हज़रत अबू बकर की सेवा करने का अवसर मिला था। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा करने का अवसर मिला और आप के साथ हिजरत करने का अवसर मिला, और फिर यह कि सौर गुफा में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए भोजन उपलब्ध करने या उस ज़माने में ख़ुराक तो बकरी का दूध था, दूध पंहुचाने के लिए उन को निर्धारित किया गया और यह नियमित तीन दिन तक वहां जाते रहे और बकरी का दूध वहां पहुंचाते रहे। फिर उन को यह भी अवसर मिला कि सुराका को अमन की तहरीर उन्होंने लिख कर दी जो आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश पर थी। फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उनकी शहादत की खबर भी उन की दुआ से दूर बैठे हुए मिली। तो यह वफा के पुतले थे जिन्होंने हर अवसर पर वफा दिखाई। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करता चला जाए।

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 08-14 फरवरी 2019 पेज 5-9)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 21 February 2019 Issue No. 8

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

ख़ुदा तआला के समक्ष अपनी श्रद्धा और वफादारी दिखाओ।
कुरआन शरीफ की सहीह इच्छा को मालूम करो और उस पर अनुकरण करो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की अपनी जमाअत से आशा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"याद रखो हमारी जमाअत इसलिए नहीं है कि जिस तरह साधारण दुनियादार जीवन व्यतीत करते हैं। केवल ज़बान से कह दिया कि हम इस सिलसिले में शामिल हो गए हैं। और अनुकरण की ज़रूरत न समझी। जैसे बदकिस्मत मुसलमानों की अवस्था है। कि पूछो तुम मुसलमान हो? तो कहते हैं कि अल्हम्दो लिल्लाह मगर नमाज़ नहीं पढ़ते और अल्लाह के शिआर का सम्मान नहीं करते। अत: मैं तुम से यह नहीं चाहता कि केवल जीभ से स्वीकार करो और अनुकरण से कुछ न दिखाओ। यह निकम्मी अवस्था है। ख़ुदा तआला इस को पसन्द नहीं करता। और दुनिया की इस अवस्था ने मांग की है कि ख़ुदा तआला ने मुझे सुधार के लिए खड़ा किया है। अत: अगर कोई मेरे साथ सम्बन्ध रख कर भी अपनी अवस्था में सुधार नहीं करता और व्यावहारिक ताकतों को तरक्की नहीं देता बल्कि ज़बान से स्वीकार कर लेने को ही काफी समझता है वे मानो अपने कर्म से मेरे न आने की ज़रूरत को वर्णन करता है। फिर अगर तुम अपने कर्म से प्रमाणित करना चाहते हो कि मेरा आना व्यर्थ है तो फिर मेरे साथ सम्बन्ध रखने के क्या अर्थ हैं? मेरे साथ सम्बन्ध रखते हो तो मेरे उद्देश्यों तथा लक्ष्यों को पूरा करो और वे यही हैं कि ख़ुदा तआला के समक्ष अपनी श्रद्धा और वफादारी दिखाओ और कुरआन शरीफ की शिक्षा पर अनुकरण करो जिस तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कर के दिखाया और सहाबा ने किया। कुरआन शरीफ की सहीह इच्छा को मालूम करो और उस पर अनुकरण करो। ख़ुदा तआला के समक्ष इतनी ही बात काफी नहीं हो सकती कि ज़बान से स्वीकार कर लिया और अनुकरण में कोई रोशनी तथा सरगर्मी न पाई जाए। याद रखो कि वह जमाअत जो ख़ुदा तआला स्थापित करना चाहता है वे अनुकरण के बिना जीवित नहीं रह सकती।

(नज़ारत इस्लाह तथा इर्शाद मर्कज़िया कादियान)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

निकाह का एलान

विनीत का निकाह दिनांक 29 दिसम्बर 2018 ई को मस्जिद अनवार कादियान में आदरणीया सलमा साहिबा पुत्री आदरणीय मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब निवासी ठट्ठल ज़िला ऊना हिमाचल के साथ 40,000 हज़ार रुपए हक मेहर पर आदरणीय मुज़फ्फर अहमद साहिब नाज़िर इस्लाह तथा इर्शाद मर्कज़िया ने पढ़ा। इस रिश्ता के हर दृष्टि से बरकतों वाला होने के लिए दुआ का विनम्र निवेदन है।

विनीत

अब्दुल हफीज़ इम्रान इब्न आदरणीय शब्बीर अहमद साहिब, कादियान

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

प्रत्येक कार्य अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार हो

बात यह है कि जब इन्सान नफ्स की भावनाओं से पाक होता है और नफ्स की भावनाओं को छोड़ कर ख़ुदा के इरादे के अन्दर चलता है उस का कोई कर्म अनुचित नहीं होता। बल्कि प्रत्येक कर्म ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार होता है। जहां लोग परीक्षा में पड़ते हैं वहां हमेशा यह बात होती है कि वे अल्लाह तआला के इरादा के अनुसार नहीं होता। ख़ुदा की इच्छा उस के विरुद्ध होती है इस तरह का आदमी अपनी भावनाओं के पीछे चलता है। जैसे क्रोध में आकर कोई इस तरह का काम उस से हो जाता है जिस के मुकदमे बन जाते हैं। फौजदारियां हो जाती हैं मगर अगर किसी का यह इरादा हो कि अल्लाह की किताब के विरुद्ध उस से कोई हरकत न हो और अपनी हर एक बात से अल्लाह की किताब की तरफ लौटेगा अवश्य ही अल्लाह की किताब परामर्श देगी। जैसे फरमाया وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (सूरत अनआम 60) अत: अगर हम अगर यह इरादा कर लें कि हम अल्लाह की किताब से परामर्श लेंगे। तो हम को ज़रूर परामर्श मिलेगा। लेकिन जो अपनी भावनाओं को अधीन हो जाता है वे अवश्य हानि उठायेगा। कई बार वह उस स्थान पर पकड़ में आता है अत: उस के मुकाबला में अल्लाह तआला ने फरमाया कि वली जो मेरे साथ बोलते चलते काम करते हैं वे मानो उसी में फना हैं। अत: जितना कोई फना होने में कम है वह उतना ही ख़ुदा से दूर है परन्तु अगर उस का फना होना इस प्रकार है जैसे ख़ुदा ने फरमाया तो उस के ईमान का अन्दाज़ा नहीं। उन के समर्थन में अल्लाह तआला फरमाता है: (مَنْ عَادٰى لِيْ وَلِيًّا فَقَدْ اٰذَنْتُهٗ بِالْحَرْبِ हदीस) जो आदमी मेरे वली का मुकाबला करता है वे मेरे साथ मुकाबला करता है। अब देख लो मुत्तकी की शान कितनी बुलन्द है और का स्तर कितना ऊंचा है। जिस का सानिध्य अल्लाह के निकट इस तरह का है कि उस का सताया जाया ख़ुदा का सताया जाना है। तो ख़ुदा उस का कितना सहायक होगा।

(मल्फूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 8 से 10)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

अख़बार बदर के पर्चों की हिफाज़त करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के ज़माना की यादगार अख़बार बदर 1952 ई से कादियान दारुल अमान से प्रकाशित हो रहा है। 2016 ई से इस के प्रादेशिक भाषाओं में संस्करण निकल रहे हैं। जो जमाअत के लोगों की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में कुरआन मजीद का आयतें, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की लेखनी के अतिरिक्त हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ताज़ा जुम्अ: के ख़ुत्बे तथा ख़िताब, हुज़ूर अनवर के दौरों की ईमान वर्धक दीनी तथा दुनियावी ज्ञान से भरपूर रिपोर्टें प्रकाशित होती हैं। इन का अध्ययन करना, इन को दूसरों तक पहुंचाना, उन पर अध्ययन करना, और इस के माध्यम से अपने बच्चों की शिक्षा दीक्षा करना हम सब पर फर्ज़ है। इन सारे उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अख़बार बदर को हिफाज़त के साथ अपने पास रखना ज़रूरी है।

धार्मिक शिक्षा दीक्षा पर आधारित यह अख़बार मांग करता है कि इस का सम्मान किया जाए अत: इस को रद्दी में बेचना इस को सम्मान को नष्ट करना है। अगर इस को संभालना संभव न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट कर दें ताकि इन पवित्र लेखनी का अपमान न हो। आशा है कि जमाअत के लोग इस तरफ विशेष ध्यान देंगे और इस से भरपूर लाभ उठाते हुए इन बातों को ध्यान में रखेंगे।

(सम्पादक)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad